राष्ट्रीय हिन्दी दैनिक

स्वतंत्र प्रभात

@swatantraprabhatmedia @swatantramedia RNI.No. UHIN/2012/43078 (epaper.swatantraprabhat.com) @SwatantraPrabhatonline news@swatantraprabhat.com

सीतापुर से प्रकाशित एंव अयोध्या ,प्रयागराज ,मिर्जापर ,गोरखपुर , बरेली ,बुंदेलखंड , उत्तराखंड , देहरादून

सीतापुर, बुधवार, 25 फरवरी 2026

वर्ष 14,अंक 306, पृष्ट 04, मूल्यः 01 रुपया

www.swatantraprabhat.com

गाज़ियाबाद , दिल्ली , हरियाणा , चंडीगढ़ , झारखण्ड , बिहार , मध्य प्रदेश ,असम, तेलंगाना आदि जनपदो में प्रसारित

कृषि महाविद्यालय में फिर लापरवाही के चलते परीक्षा टली....03

श्रीभूमि जिले के मॉडल विलेज कृष्णानगर गाँव जल जीवन मिशन से वंचित! पीने के पानी की गंभीर किल्लत...04

स्वतंत्र प्रभात दैनिक अख़बार तथा ऑनलाइन चैनल से सीधा जुड़ने के लिए संपर्क करें.....
9511151254

एससी का अहम फैसला, कलकत्ता HC को एसआईआर वैरिफिकेशन के लिए पड़ोसी राज्यों से जजों की नियुक्ति की इजाजत

●सुप्रीम कोर्ट ने कलकत्ता ाष्ट के चीफ जस्टिस से कहा कि वे झारखंड और ओडिशा के अपने समकक्षों से अनुरोध करें और स्थिति से निपटने के लिए समान रैंक के न्यायिक अधिकारियों को अपने यहां बुला लें. साथ ही श्वष्ट को झारखंड और ओडिशा से न्यायिक अधिकारियों को तैनात करने का खर्च उठाने का निर्देश भी दिया

सुप्रीम कोर्ट ने पश्चिम बंगाल में चल रहे वोटर लिस्ट के स्पेशल इंटेंसिव रिवीजन (SIR) प्रोसेस में आज मंगलवार को अपने फैसले में न्यायिक अफसरों के पूल का दायरा बढ़ा दिया. कोर्ट ने आज मंगलवार को अपने अहम फैसले में बंगाल में एसआईआर को लेकर कलकत्ता हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस को 80 लाख दावों और आपत्तियों को निपटने के लिए सिविल जजों को तैनात करने के साथ-साथ पड़ोसी राज्यों झारखंड और ओडिशा से न्यायिक अधिकारियों को बुलाने की अनुमति दे दी।

चीफ जस्टिस CJI सूर्यकांत और जस्टिस जॉयमाल्या बागची और विपुल एम पंचोली की बेंच ने कलकत्ता हाई कोर्ट के चीफ जस्टिस के उस पत्र पर ध्यान दिया, जिसमें कहा गया था कि SIR प्रोसेस के तहत तार्किक विसंगति और अवर्गीकृत श्रेणी के अंतर्गत रखे गए वोटर्स के दस्तावेजों की जांच के लिए 294 सेवारत और रिटायर न्यायिक जजों को तैनात करने के बावजूद 80 लाख मामलों की जांच में कम से कम 80 दिन लगेंगे।

अनुच्छेद 142 के तहत बढ़ाया न्यायिक दायरा

एसआईआर प्रोसेस को लेकर गंभीर स्थिति और समय की भारी कमी को देखते हुए, बेंच ने अनुच्छेद 142 के तहत न्यायिक अफसरों के पूल का दायरा बढ़ा दिया और इसके लिए सिविल जजों को भी तैनात करने को लेकर अपनी हरी झंडी दे दी. कोर्ट ने 3 साल के अनुभव वाले न्यायिक अधिकारियों को नियुक्त करने की अनुमति दी है।

देश की सबसे बड़ी अदालत ने कलकत्ता हाईकोर्ट के चीफ जस्टिस से कहा कि वे झारखंड और ओडिशा के अपने समकक्षों से अनुरोध करें और स्थिति से निपटने के लिए समान रैंक के न्यायिक अधिकारियों को अपने यहां बुला लें. साथ ही कोर्ट ने चुनाव आयोग (EC) को झारखंड और ओडिशा से न्यायिक अधिकारियों को तैनात करने का खर्च उठाने का निर्देश भी दिया।

आयोग को फाइनल लिस्ट जारी करने का आदेश

साथ ही कोर्ट ने चुनाव आयोग को 28 फरवरी को फाइनल इलेक्टोरल रोल पब्लिश करने की भी अनुमति दे दी, और यह साफ किया कि वेरिफिकेशन की प्रक्रिया आगे बढ़ने पर पोल पैनल सप्लीमेंट्री लिस्ट जारी कर सकता है. इसने धारा 142 के तहत पूरी शक्तियों का

इस्तेमाल करके वोटरों को सप्लीमेंट्री इलेक्टोरल रोल में शामिल किया, ताकि वे 28 फरवरी को पोल पैनल द्वारा पब्लिश की गई फाइनल लिस्ट का हिस्सा बन सकें।

साल 2002 की वोटर लिस्ट से जुड़ी संतानों में लॉजिकल अंतरों में माता-पिता के नाम में अंतर और वोटर तथा उसके माता-पिता के बीच उम्र का अंतर 15 साल से कम या 50 साल से ज्यादा होना शामिल है. इससे पहले 20 फरवरी को, पश्चिम बंगाल सरकार और चुनाव आयोग के बीच चल रही खींचतान से निराश होकर, सुप्रीम कोर्ट ने राज्य में चल रही SIR प्रक्रिया में पोल पैनल की मदद के लिए मौजूदा और पूर्व जिला जजों को तैनात करने का 'असाधारण' निर्देश जारी किया।

चुनाव आयोग और पश्चिम बंगाल में 'लोकतांत्रिक तरीके से चुनी हुई' तृणमूल कांग्रेस सरकार के बीच 'दुर्भाग्यपूर्ण आरोप-प्रत्यारोप' और 'भरोसे की कमी' पर अफसोस जताते हुए, सुप्रीम कोर्ट की बेंच ने SIR की प्रक्रिया को पूरा करने को लेकर कई नए निर्देश दिए थे।

सुप्रीम कोर्ट में आज क्या-क्या हुआ?

» सुप्रीम कोर्ट में बंगाल के जजों से ही होगा तो 80 दिन लगेंगे।

» इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने ओडिशा और झारखंड के जजों की तैनाती को दी अनुमति।

» सुप्रीम कोर्ट ने पश्चिम बंगाल में लंबित कार्यों के मद्देनज़र बड़ा फैसला देते हुए ओडिशा और झारखंड के

» न्यायिक अधिकारियों की तैनाती की अनुमति दे दी।

» अदालत ने सुनवाई के दौरान टिप्पणी की कि यदि काम केवल बंगाल के न्यायाधीशों के भरोसे छोड़ा गया, तो प्रक्रिया पूरी होने में करीब 80 दिन लग सकते हैं।

» शीर्ष अदालत ने कहा कि समयबद्ध तरीके से दावों और आपत्तियों के निपटारे के लिए अतिरिक्त न्यायिक अधिकारियों की जरूरत है।

» कोर्ट ने स्पष्ट किया कि पारदर्शिता और निष्पक्षता सुनिश्चित करने के लिए बाहरी राज्यों के जजों की नियुक्ति उचित कदम है।

झारखंड एअर एम्बुलेंस क्रैश में किस कंपनी का था विमान, कौन है मालिक..जानिए हर डिटेल

●झारखंड के चतरा में एक मेडिकल एयर एंबुलेंस दुर्घटनाग्रस्त हो गई, जिसमें सवार सभी 7 लोगों की दुखद मौत हो गई. रांची से दिल्ली जा रहा रेडबर्ड एयरवेज का यह विमान उड़ान के तुरंत बाद एटीसी से संपर्क खो बैठा. जानते हैं इस हादसे का शिकार हुए एयरक्राफ्ट का मालिक कौन है

झारखंड के रांची से नई दिल्ली जा रही एक मेडिकल एयर एंबुलेंस सोमवार शाम चतरा जिले के घने जंगल में क्रैश हो गई.उड़ान भरने के 20-25 मिनट के अंदर ही प्लेन का एयर ट्रैफिक कंट्रोलर्स से कम्युनिकेशन और रडार कॉन्टैक्ट टूट गया. इस एयरक्राफ्ट ने बिरसा मुंडा एयरपोर्ट से शाम करीब 7:11 उड़ान भरी थी। इस एयर एंबुलेंस में कुल 7 लोग सवार थे। ये सभी लोग इस हादसे का शिकार हो गए।

ये एयरक्राफ्ट चतरा जिले के सिमरिया में एक जंगली इलाके में क्रैश हुआ मिला. इस एयरक्राफ्ट को रेडबर्ड एयरवेज प्राइवेट लिमिटेड कंपनी ने बनाया है. जानते हैं इस कंपनी से जुड़ी कुछ अहम जानकारी के बारे में, जैसे कि ये कंपनी किसकी है और ये कबसे शुरू की गई है।

कौन है मालिक?

रेडबर्ड एयरवेज प्राइवेट लिमिटेड की शुरुआत 2018 में की गई थी. एंटरप्रेन्योर अक्षय कुमार ने इसके मैनेजिंग डायरेक्टर हैं और ये प्रमोटर के तौर पर भी यहां काम करते हैं. रेडबर्ड कंपनी दिल्ली में मौजूद है. यह कंपनी चार्टर फ्लाइट सर्विस, एयर एम्बुलेंस ऑपरेशन और दूसरी जनरल एविएशन सर्विस देती है.

इस कंपनी के मैनेजिंग डायरेक्टर अक्षय कुमार को एविएशन सेक्टर में 14 साल का अनुभव है. वो एयरक्राफ्ट इंजीनियर के तौर पर प्रोफेशनली क्वालिफाइड हैं. 2018 में बनी इस कंपनी ने चार्टर सर्विस और स्पेशल मेडिकल इवैक्युएशन फ्लाइट चलाने के लिए अगस्त 2019 में अपना एयर ऑपरेटर परमिट (NSOP) हासिल किया था।

ज्यादा पुरानी कंपनी नहीं होने की वजह से रेडबर्ड एयरवेज़ अभी ग्रोथ के दौर में है और घरेलू और इंटरनेशनल दोनों तरह के ऑपरेशन को सपोर्ट करने के लिए अपने बिज़नेस जेट के बेड़े को बढ़ा रही है. 2024 तक फ्लीट की जानकारी लिंक्डइन पर मौजूद जानकारी के मुताबिक, रेडबर्ड एयरवेज़ एक DGCA-अप्रूव्ड नॉन-शेड्यूल्ड एयर ट्रांसपोर्ट ऑपरेटर है।

कंपनी के फ्लीट में शामिल एयरक्राफ्ट

बीचक्राफ्ट किंग एयर C90
बीचक्राफ्ट सुपर किंग एयर B200
बीचक्राफ्ट सुपर किंग एयर B250
हॉकर 850XP
फाल्कन 2000
अगस्ता 109 (हेलीकॉप्टर)

इस हादसे में किसकी हुई मौत?

दो पायलट कैप्टन विवेक विकास भगत और कैप्टन सवराजदीप सिंह, मरीज़ संजय कुमार, अटेंडेंट अर्चना देवी और धुरु कुमार, एक डॉक्टर, डॉ. विकास कुमार गुप्ता, और पैरामेडिक सचिन कुमार मिश्रा सवार थे।

फिलहाल इस एयरक्राफ्ट के क्रैश होने की वजह नहीं बताई गई है. रांची एयरपोर्ट के डायरेक्टर ने कहा कि खराब मौसम क्रैश का कारण हो सकता है। हालांकि, जांच के बाद इसकी असली वजह का पता चलेगा।

मरीज को बेहतर इलाज के लिए दिल्ली ला रहे थे

लातेहार जिले के चंदवा के रहने वाले मरीज संजय कुमार (41) को 16 फरवरी को 65 परसेंट जलने की हालत में अस्पताल लाया गया था। अस्पताल में उनका इलाज चल रहा था। उन्होंने आगे कहा कि परिवार वालों ने उन्हें बेहतर इलाज के लिए दिल्ली ले जाने का फैसला किया। उन्होंने सोमवार को एयर एम्बुलेंस का इंतजाम किया. मरीज शाम करीब 4.30 बजे अस्पताल से दिल्ली के लिए निकला।

संक्षिप्त ख़बरें

मीटर लगाने वाली टीम के साथ मारपीट ,पुलिस जांच पड़ताल में जुटी

नैनी,प्रयागराज। नैनी क्षेत्र के प्रयागपुरम मोहल्ले में बिजली विभाग की मीटर लगाने वाली टीम के साथ मारपीट का मामला सामने आया है। यह घटना सोमवार दोपहर लगभग 1:00 बजे की बताई जा रही है। हमले में बिजली विभाग का एक कर्मचारी गंभीर रूप से घायल हो गया, घटना के बाद मौके पर अफरा-तफरी का माहौल बन गया।घटना से आक्रोशित बिजली विभाग के कर्मचारियों ने नैनी कोतवाली पहुंचकर शिकायत पत्र दिया है।कार्रवाई की मांग की है।घटना का वीडियो सोशल मीडिया पर तेजी से वायरल हो रहा है। हालांकि दूसरा पक्ष भी नैनी कोतवाली में लिखित तहरीर दिया है।जहां पुलिस मामले की जांच पड़ताल में जुटी हुई है

रास्ते के विवाद में खूनी संघर्ष, 13 नामजद समेत कई पर मुकदमा दर्ज

मोहल्ले में पुलिस बल तैनात, जांच पड़ताल में जुटी पुलिस

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के पूरे देवी रामलीला मैदान मोहल्ले में रविवार को रास्ते के पुराने विवाद में दो पक्षों में जमकर मारपीट हुई। दोनों ओर से सात लोग घायल हुए। घायलों को इलाज के लिए सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र पहुँचाया गया। हालत गंभीर होने पर अजमेर और प्रदीप को जिला अस्पताल रेफर किया गया। अजमेर की स्थिति गंभीर बनी हुई है। रास्ते को लेकर लंबे समय से विवाद चल रहा था। मामला कई बार तहसील और पुलिस तक पहुंचा, लेकिन समाधान नहीं निकला। रविवार को कहासुनी के बाद विवाद खूनी संघर्ष में बदल गया। एक पक्ष से अजमेर, शेर बहादुर, मंजू सोनी और कमला घायल हुए। दूसरे पक्ष से सौरभ, प्रदीप और संतोष को चोटें आई। पुलिस ने दोनों पक्षों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया है। एक पक्ष से शेर बहादुर, अमरेश, अवधेश, अजमेर, मंजू, सुनील और अनिल नामजद किए गए हैं। दूसरे पक्ष से संतोष वर्मा, नीरज, धीरज, सौरभ और प्रदीप समेत अन्य अज्ञात लोगों पर केस दर्ज हुआ है। प्रभारी निरीक्षक प्रमोद कुमार सिंह ने बताया कि मामले में गंभीर धाराओं में कार्रवाई की गई है। पुलिस जांच कर रही है। मोहल्ले में एहतियातन पुलिस बल तैनात है।

यूपी में 580 करोड़ रुपये से स्थापित होगी बीयर फैक्ट्री, 4000 लोगों को मिलेगा रोजगार

● एल्को ब्रेव 580 करोड़ रुपये का निवेश करेगी।

● सीतापुर में बीयर फैक्ट्री स्थापित होगी।

● चार हजार से अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। एथेनॉल के साथ ही अल्कोहल कंपनियों के लिए जिला पहली पसंद बन गया है। रेडिको खेतान की शराब फैक्ट्री कंदुनी में चल रही है। उधर, एल्को ब्रेव प्राइवेट लिमिटेड ने भी जिले में 580 करोड़ रुपये के निवेश से बीयर की उत्पादन और बाटलिंग फैक्ट्री स्थापित करने का समझौता ज्ञापन (एमओयू) साइन किया है। कंपनी की ओर से हाईवे व स्टेट हाईवे के किनारे जमीन की तलाश की जा रही है। उद्योग केंद्र के कर्मचारी इसमें उनका सहयोग कर रहे हैं।

जिले के करीब 10 लाख किसान साढ़े पांच लाख हेक्टेयर जमीन पर गन्ना, धान, गेहूं, जौ आदि की खेती करते हैं। यही खासियत कृषि आधारित उद्योगों को लुभा रही है। रामगढ, जवाहरपुर, हरगांव और बिसवां चीनी मिल में अल्कोहल की डिस्टलरी पहले से चल रही हैं।

अल्कोहल और अनाज की उपलब्धता के चलते शराब कंपनियां भी जिले में निवेश करने में रुचि ले रही हैं। एल्को ब्रेव कंपनी ने 580 करोड़ रुपये का निवेश करने लिए एमओयू साइन किया है। बीयर फैक्ट्री स्थापित होने पर इसमें 4000 से अधिक लोगों को रोजगार मिलेगा। 2200 लोगों को कंपनी प्रत्यक्ष रोजगार देगी।

शेष को सप्लाई चेन, परिवहन, सुरक्षा आदि में रोजगार दिया जाएगा। कंपनी की ओर से गोला, लखीमपुर, लखनऊ और बिसवां-बहराइच मार्ग पर जमीन की तलाश की जा रही है। जमीन उपलब्ध कराने के लिए किसानों को प्रेरित किया जा रहा है।

दुनिया के चुनिंदा बीयर उत्पादक स्थलों में शामिल होगा जिला

फैक्ट्री प्रतिवर्ष डेढ़ अरब लीटर बीयर का उत्पादन करेगी, जोकि दुनिया की गिनी-चुनी इकाइयों में एक होगी। अमेरिका, इंग्लैंड और ब्राजील में ही इस क्षमता की चंद इकाइयां हैं। इसके अला किसी भी देश में इतनी बड़ी बीयर फैक्ट्री नहीं है।

परिवहन को मिलेगा बड़ा फलक

फैक्ट्री में बीयर की बालटिंग करके देश के कोने-कोने में आपूर्ति की जाएगी। इसके लिए बड़ी संख्या में ट्रक की जरूरत पड़ेगी। ट्रांसपोर्टर शादाब ने बताया कि इतनी बड़ी फैक्ट्री में कम से कम एक हजार वाहनों का अनुबंध किया जाता है। शराब कंपनियां ढुलाई का अच्छा पैसा भी देती हैं। साथ ही चालक और परिचालक को भी मूलभूत सुविधाएं उपलब्ध कराती हैं।

ग्रेटर नोएडा में युवक को दिनदहाड़े दौड़ाकर गोलियां मारीं, CCTV में कैद हुई खौफनाक मौत

●पुरानी रंजिश में ग्रेटर नोएडा के लुक्सर गांव में की गई हत्या

सचिन और साथियों ने नितिन को गोली मारकर हत्या की

पुलिस ने दो आरोपियों को गिरफ्तार किया, बाकी की तलाश जारी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ग्रेटर नोएडा। ग्रेटर नोएडा में थाना ईकोटेक प्रथम क्षेत्र के ग्राम लुक्सर में पुरानी रंजिश के चलते दो पक्षों के बीच विवाद हिंसक हो गया। आरोप है कि सचिन और उसके साथियों ने ताबड़तोड़ कई गोलियां मारकर नितिन की हत्या कर दी। घटना के बाद इलाके में अफरा-तफरी मच गई। परिजन और स्थानीय लोग घायल नितिन को तत्काल नजदीकी अस्पताल लेकर पहुंचे, जहां उपचार के दौरान उसने दम तोड़ दिया। वहीं, कासना व ईकोटेक-1 कोतवाली पुलिस के साथ मिलकर स्वाट टीम ने लुक्सर में युवक की हत्या के एक आरोपी को मुठभेड़ में गिरफ्तार कर लिया है। आरोपी ईकोटेक-वन कोतवाली का हिस्ट्रीशीटर है। पुलिस के अनुसार, मुठभेड़ में आरोपी के पैर में गोली लगी और उसे अस्पताल में भर्ती कराया गया है। परिजनों का आरोप है कि हिस्ट्रीशीटर की शह पर ही आरोपियों ने हत्या की वारदात को अंजाम दिया था।

हमलावर दौड़ाकर मारते हैं गोली

ये खौफनाक वारदात सीसीटीवी में कैद हो गई। हमलावर युवक नितिन के पीछे आते और खतरे का एहसास होते ही नितिन भागता है। इसके बाद हमलावर नितिन को दौड़ाकर गोली मार देते हैं।

दोनों पक्षों के बीच रंजिश चल रही थी

सूचना मिलते ही पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंच गए और घटनास्थल का निरीक्षण किया। प्राथमिक जांच में सामने आया है कि दोनों पक्षों के बीच पहले से रंजिश चली आ रही थी, जिसके चलते यह वारदात हुई। बताया जा रहा है हमलावर पक्ष के एक व्यक्ति की वर्ष 2024 में हत्या की गई थी, जिसमें नितिन मुख्य आरोपित था।

दो आरोपियों को हिरासत में लिया

स्वजन की शिकायत के आधार पर केस दर्ज किया गया। पुलिस टीमें गठित की गई है। सीसीटीवी फुटेज का अवलोकन कर तत्काल कार्रवाई करते हुए पुलिस ने दो आरोपितों को हिरासत में ले लिया है। बाकी की तलाश जारी है। घटना के बाद गांव में तनाव का माहौल है। पुलिस ने एहतियातन क्षेत्र में गश्त बढ़ा दी है ताकि किसी प्रकार की अप्रिय स्थिति न उत्पन्न हो।

संदेह की आग में जला 57 साल का वैवाहिक जीवन; अरवल कोर्ट ने पति को सुनाई फांसी की सजा

कलेर (अरवल)। अपर जिला एवं सत्र न्यायाधीश प्रथम रवि रंजन मिश्रा की अदालत ने पत्नी की नृशंस हत्या के मामले में बीरखल प्रसाद को फांसी की सजा सुनाई है। मामला 22 जुलाई का है। इसी दिन बीरखल प्रसाद की शादी की 57वीं वर्षगांठ थी। अभियोजन के अनुसार, इसी दिन उसने अपनी पत्नी सुमंती सिन्हा की बेरहमी से हत्या कर दी। न्यायालय में प्रस्तुत साक्ष्यों, परिस्थितिजन्य प्रमाणों और गवाहों के आधार पर अदालत ने इसे जघन्य अपराध मानते हुए कठोरतम दंड सुनाया।

चाचा ने कराई थी शादी पुलिस पूछताछ में आरोपी ने बताया था कि करीब 57 वर्ष पूर्व उसके चाचा दीपा साव ने उसकी शादी किंजर थाना क्षेत्र के हाजीपुर निवासी भावनाथ साव की पुत्री सुमंती से कराई थी। भावनाथ साव दिव्यांग थे, जिसके कारण वह इस विवाह के लिए पहले सहमत नहीं था, लेकिन पारिवारिक दबाव में विवाह हुआ। आरोपी ने यह भी बताया कि वह पहले हजारीबाग के तेनूघाट में विद्युत विभाग में कार्यरत था। बाद में उसकी नियुक्ति शिक्षक पद पर हुई। नौकरी के दौरान वह अरवल शहर में बच्चों के साथ रहकर उनकी पढ़ाई कराता था, जबकि उसकी पत्नी गांव में रहकर उसके चाचा की सेवा करती थी। सेवानिवृत्ति के बाद वह स्वयं गांव में रहने लगा।

चाचा की सेवा से संदेह बताया गया कि पत्नी द्वारा अधिक समय चाचा की सेवा में लगाए जाने को लेकर आरोपी के मन में संदेह उत्पन्न हो गया था। इसी बात को लेकर दोनों के बीच अक्सर विवाद होता रहता था। अभियोजन पक्ष के अनुसार, इसी मानसिकता के चलते आरोपी ने पूर्व नियोजित साजिश के तहत हत्या की वारदात को अंजाम दिया। अदालत ने अपने फैसले में कहा कि यह अपराध विश्वास, वैवाहिक संबंधों और सामाजिक मर्यादाओं को तार-तार करने वाला है। न्यायालय ने इसे 'दुर्लभतम श्रेणी' का मामला मानते हुए फांसी की सजा सुनाई। फैसले के बाद पुलिस ने आवश्यक कानूनी प्रक्रिया पूरी कर आरोपी को न्यायिक हिरासत में भेज दिया। इस निर्णय को लेकर आमजन में मिश्रित प्रतिक्रिया देखने को मिल रही है, वहीं महिला संगठनों ने अदालत के फैसले का स्वागत किया है।

पंच कोसी परिक्रमार्थियों को मिलेगा अस्थाई बिजली कनेक्शन, प्रति यूनिट के लिए रेट तय

● परिक्रमार्थियों को छोलदारी के लिए अस्थाई बिजली कनेक्शन।

आधार और एक हजार रुपये सिक्योरिटी मनी जमा करनी होगी।

सुरक्षा हेतु 80 बिजली के खंभे प्लास्टिक से ढके गए।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर। पंच कोसी परिक्रमार्थियों को छोलदारी (राउटी) के लिए अस्थाई बिजली कनेक्शन देने की बिजली विभाग की ओर से पहल की गई है। इससे 28 फरवरी से मिश्रिख मेला मैदान पर छोलदारी लगाने वाले श्रद्धालुओं को प्रकाश की दिक्कत नहीं होगी। उन्हें मोमबत्ती का प्रयोग नहीं करना होगा।

मिश्रिख के उपखंड अधिकारी अंकुर वर्मा ने बताया कि छोलदारी (राउटी) के लिए बिजली कनेक्शन लेने के लिए श्रद्धालु को केवल आधार की छायाप्रति व एक हजार रुपये सिक्योरिटी मनी के जमा करने होगी। श्रद्धालु जाने के समय सिक्योरिटी मनी वापस प्राप्त करेंगे। इसमें से जितना बिजली खर्च करेंगे, उतना पैसा जमा कर शेष वापस कर दिया जाएगा। बिजली खर्च का बिल चार रुपये प्रति यूनिट लगेगा। अस्थाई कनेक्शन देने की इस पहल से जहां विभाग को राजस्व मिलेगा वहीं परिक्रमार्थियों को प्रकाश की सुविधा होगी।

लगेंगी तीन मोबाइल ट्रॉली

परिक्रमा अवधि में बिजली कटौती न हो इसको लेकर विभाग अतिरिक्त व्यवस्था कर रहा है। नैमिषारण्य उपकेंद्र पर एक मोबाइल ट्राली के साथ दो अतिरिक्त ट्राली मंगाई जा रही हैं। अगर क्षेत्र में कोई फाल्ट

आती है तो तत्काल मोबाइल ट्राली को भेजकर उसके सही कराया जाएगा। इसके बाद फाल्ट को सही कराना होगा।

ढके जा चुके बिजली के खंभे

मिश्रिख में पंचकोसी परिक्रमा मार्ग पर करीब 80 बिजली के खंभे हैं, जिन्हें विभाग की ओर से ढकवा दिया गया है। इन खंभे को प्लास्टिक से ढका गया है ताकि परिक्रमा के दौरान किसी प्रकार की समस्या न हो। जमीन से दो मीटर तक इन्हें ढका गया।

मुख्य अभियंता ले चुके हैं जानकारी

सीतापुर जोन के मुख्य अभियंता आरके सिंह ने नैमिषारण्य व मिश्रिख बिजली उपकेंद्र पहुंचकर परिक्रमार्थियों के लिए की जा रही व्यवस्थाओं का जायजा ले चुके हैं। मुख्य अभियंता ने अधिशासी अभियंता सिधौली शैलेंद्र सिंह राजपूत से स्वयं नजर बनाने के निर्देश दिए है। इस दौरान अधीक्षण अभियंता ललित कृष्ण भी साथ रहे।

भारत की सुरक्षा के खिलाफ साजिशें और सतर्कता की जीत आतंकवाद के बदलते स्वरूप पर गंभीर चिंतन

देश की राजधानी दिल्ली और कोलकाता जैसे महानगरों में हाल ही में जिस प्रकार की आतंकी साजिश का खुलासा हुआ, उसने एक बार फिर यह स्पष्ट कर दिया है कि आतंकवाद का खतरा केवल सीमाओं तक सीमित नहीं है, बल्कि वह अपने रूप बदलकर समाज के भीतर घुसपैठ करने की कोशिश करता रहता है। दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल और अन्य सुरक्षा एजेंसियों की तत्परता से एक बड़े षड्यंत्र को समय रहते विफल कर दिया गया। यह घटना केवल कुछ पोस्टर लगाने या संदिग्ध गतिविधियों तक सीमित नहीं थी, बल्कि इसके पीछे एक संगठित मॉड्यूल, विदेशी निर्देश और व्यापक नेटवर्क की आशंका सामने आई है।

सात फरवरी को कश्मीरी गेट और आसपास के क्षेत्रों में लगाए गए देशविरोधी पोस्टरों ने सुरक्षा एजेंसियों को सतर्क कर दिया। इन पोस्टरों में भारत विरोधी संदेश और आतंकवादी संगठनों से जुड़े व्यक्तियों की तस्वीरें थीं। सबसे पहले इस गतिविधि पर सीआईएसएफ की नजर पड़ी और सूचना मिलते ही दिल्ली पुलिस की पेट्रोलिंग यूनिट सक्रिय हुई। मामले की गंभीरता को देखते हुए जांच दिल्ली पुलिस की स्पेशल सेल को सौंपी गई। स्पेशल सेल के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त प्रमोद कुमार कुशवाहा के नेतृत्व में जांच आगे बढ़ी और संदिग्धों की धरपकड़ शुरू हुई।

जांच में यह खुलासा हुआ कि इस साजिश के तार बांग्लादेश से जुड़े हुए थे। कोलकाता से एक बांग्लादेशी नागरिक सहित दो आरोपियों को गिरफ्तार किया गया। पूछताछ में उन्होंने स्वीकार किया कि उन्होंने दिल्ली और कोलकाता के विभिन्न स्थानों पर पोस्टर लगाए थे। यह भी सामने आया कि कोलकाता के कई मेट्रो स्टेशनों पर इसी प्रकार की गतिविधियां की गई थीं। आरोपियों को निर्देश देने वाला शख्स शब्बीर अहमद लोन बताया गया, जो जम्मू कश्मीर के गंदेरबल का निवासी है और पूर्व में लश्कर ए तैयबा से जुड़ा रहा है। वर्ष 2007 में उसकी गिरफ्तारी के बाद वह जेल में रहा और 2019 में रिहा हुआ। जांच एजेंसियों का दावा है कि रिहाई के बाद उसने फिर से आतंकी संपर्क स्थापित किए और एक नया मॉड्यूल खड़ा करने की कोशिश की। आतंकवाद की यही प्रवृत्ति सबसे अधिक चिंताजनक है कि वह बार बार नए चेहरों और नई रणनीतियों के साथ सामने आता है। कभी वह हथियारों के जरिए हमला करता है, कभी वैचारिक युद्ध के माध्यम से समाज में जहर घोलने की कोशिश करता है। पोस्टर जैसे प्रतीत होने वाले साधारण माध्यम का उपयोग भी यदि किसी बड़े षड्यंत्र का हिस्सा हो सकता है, तो यह सुरक्षा तंत्र के लिए गंभीर चेतावनी है। तमिलनाडु से छह बांग्लादेशी नागरिकों की गिरफ्तारी ने इस पूरे प्रकरण को और व्यापक बना दिया है। जांच में यह संकेत मिले कि इन लोगों को किसी बड़ी वारदात के लिए तैयार किया जा रहा था। सुरक्षा एजेंसियां अब इनके नेटवर्क, फंडिंग और अंतरराष्ट्रीय संपर्कों की पड़ताल कर रही हैं। यह भी जांच का विषय है कि किस प्रकार सीमापार बैठे हैंडलर भारत के भीतर युवाओं को प्रभावित करने या भ्रमित करने का प्रयास करते हैं। इस पूरे घटनाक्रम के समानांतर अरब सागर में विदेशी सामान की तस्करी का मामला भी सामने आया, जिसमें अल मुख्तार नामक नाव से लगभग पांच करोड़ रुपये मूल्य की विदेशी सिगरेट बरामद की गई। चार ईरानी नागरिकों को हिरासत में लिया गया और उनके पास से सैटेलाइट फोन जब्त किए गए। यद्यपि यह मामला सीधे तौर पर आतंकवाद से जुड़ा हुआ सिद्ध नहीं हुआ है, परंतु तस्करी, अवैध वित्तीय लेनदेन और आतंकी गतिविधियों के बीच संबंधों को नकारा नहीं जा सकता। कई बार ऐसे अवैध माध्यम ही आतंकवाद की फंडिंग का आधार बनते हैं। आतंकवाद केवल बंदूक और बम का नाम नहीं है। यह एक विचारधारा भी है जो असंतोष, कट्टरता और भ्रम के सहारे पनपती है। जब कोई संगठन युवाओं को राष्ट्रविरोधी गतिविधियों के लिए प्रेरित करता है, तो वह केवल कानून का उल्लंघन नहीं करता बल्कि समाज की एकता और विश्वास को भी तोड़ने का प्रयास करता है। भारत जैसे विविधतापूर्ण देश में जहां अनेक धर्म, भाषाएं और संस्कृतियां साथ रहती हैं, वहां ऐसी गतिविधियां सामाजिक सौहार्द के लिए बड़ा खतरा बन सकती हैं। सुरक्षा एजेंसियों की सफलता इस बात का प्रमाण है कि देश की आंतरिक सुरक्षा व्यवस्था मजबूत है और किसी भी संदिग्ध गतिविधि को हल्के में नहीं लिया जाता। तकनीकी निगरानी, खुफिया सूचनाओं का आदान प्रदान और राज्यों के बीच समन्वय ने इस साजिश को नाकाम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। किंतु यह भी सत्य है कि आतंकवाद के विरुद्ध लड़ाई केवल सुरक्षा बलों के भरोसे नहीं लड़ी जा सकती। समाज की सजगता, नागरिकों की जिम्मेदारी और युवाओं में सकारात्मक सोच का विकास भी उतना ही आवश्यक है।

डिजिटल क्रांति के दौर में सार्वजनिक पुस्तकालयों की अनिवार्यता ,ई-कंटेंट से दिशा पाते युवा और ज्ञान-संस्कृति की नई धारा

वर्तमान समय को यदि ज्ञान और तकनीक का युग कहा जाए तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इंटरनेट, स्मार्टफोन और डिजिटल प्लेटफॉर्म ने जानकारी को सहज, सुलभ और त्वरित बना दिया है। आज का युवा वर्ग ई-कंटेंट, ऑनलाइन पाठ्यसामग्री, ई-बुक्स और ऑडियो बुक्स की ओर तीव्र गति से आकर्षित हो रहा है। इसके बावजूद यह सत्य उतना ही प्रबल है कि सार्वजनिक पुस्तकालयों की आवश्यकता आज पहले से अधिक बढ़ गई है। पुस्तकालय केवल पुस्तकों का भंडार नहीं, बल्कि समाज की बौद्धिक चेतना, सांस्कृतिक परंपरा और नैतिक मूल्यों के संरक्षक हैं। यदि इनकी उपेक्षा की गई तो ज्ञान-संस्कृति की जड़ें कमजोर पड़ सकती हैं।

सार्वजनिक पुस्तकालयों ने सदैव पढ़ने-लिखने की आदत को विकसित किया है। अकादमिक शिक्षा हो या स्वाध्याय के माध्यम से आत्मविकास की आकांक्षा, पुस्तकालय हर वर्ग के लिए समान रूप से उपयोगी रहे हैं। शांत वातावरण, अनुशासित परिवेश और विविध विषयों पर उपलब्ध साहित्य व्यक्ति को गहन अध्ययन की ओर प्रेरित करता है। डिजिटल माध्यमों की तात्कालिकता के बीच पुस्तकालय मन को स्थिरता प्रदान करते हैं। यह स्थिरता ही गहन चिंतन और मौलिक विचारों को जन्म देती है। देश में सार्वजनिक पुस्तकालयों की स्थिति पर दृष्टि डालें तो यह स्पष्ट होता है कि विभिन्न राज्यों में इनकी संख्या और गुणवत्ता में व्यापक अंतर है। उपलब्ध आंकड़ों के अनुसार 2018-19 तक देश में 46,746 सार्वजनिक पुस्तकालय थे, जिसका उल्लेख राजा राममोहन राय लाइब्रेरी फाउंडेशन ने किया था। यह संख्या आशाजनक प्रतीत होती है, परंतु देश की विशाल जनसंख्या और युवाओं की बढ़ती संख्या को देखते हुए यह पर्याप्त नहीं कही जा सकती। महाराष्ट्र, केरल, कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्यों में हजारों पुस्तकालय हैं, जबकि कुछ समृद्ध राज्यों में इनकी संख्या अत्यंत सीमित है। इससे यह सिद्ध होता है कि पुस्तकालयों का विकास केवल आर्थिक स्थिति पर निर्भर नहीं करता, बल्कि पढ़ने की संस्कृति और शासन की प्राथमिकताओं पर आधारित होता है।

विशेष रूप से केरल का उदाहरण उल्लेखनीय है, जहां सीमित संसाधनों के बावजूद पढ़ने की परंपरा सशक्त है। इसके विपरीत कुछ धनी राज्यों में पुस्तकालयों की संख्या अत्यल्प है। अनेक राज्यों में पुस्तकालय भवन जर्जर अवस्था में हैं, स्टाफ की कमी है और नई पुस्तकों की उपलब्धता सीमित है। ग्रामीण और छोटे कस्बों में तो डिजिटल संसाधनों का अभाव और भी स्पष्ट दिखाई देता है। यह स्थिति चिंताजनक है, क्योंकि पुस्तकालय सामाजिक समानता और ज्ञान के लोकतंत्रीकरण का माध्यम हैं।

डिजिटल युग ने अध्ययन के स्वरूप को परिवर्तित कर दिया है। ई-कंटेंट ने युवाओं के लिए नई संभावनाओं के द्वार खोले हैं। ऑनलाइन कोर्स, डिजिटल जर्नल, शैक्षणिक वीडियो और ऑडियो सामग्री ने सीखने की प्रक्रिया को अधिक लचीला बना दिया है। प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करने वाले लाखों विद्यार्थी इंटरनेट के माध्यम से अद्यतन जानकारी प्राप्त कर रहे हैं। कई सार्वजनिक पुस्तकालयों ने भी डिजिटल सेवाएं आरंभ की हैं, जिससे वे युवाओं के लिए अधिक आकर्षक बन रहे हैं। ई-कंटेंट का महत्व इस बात में है कि यह समय और स्थान की सीमाओं को समाप्त करता है। विद्यार्थी घर बैठे विश्वस्तरीय सामग्री तक पहुंच सकते हैं। दृष्टिबाधित या विशेष आवश्यकता वाले विद्यार्थियों के लिए ऑडियो बुक्स और सहायक तकनीक अत्यंत उपयोगी सिद्ध हो रही हैं। इस प्रकार डिजिटल संसाधन शिक्षा को अधिक समावेशी और व्यापक बनाते हैं। परंतु यह भी ध्यान रखना आवश्यक है कि डिजिटल संसाधनों तक समान पहुंच सभी को प्राप्त नहीं है। इंटरनेट और उपकरणों की कमी डिजिटल विभाजन को जन्म देती है। ऐसे में सार्वजनिक पुस्तकालय इस खाई को पाटने का माध्यम बन सकते हैं। यदि पुस्तकालयों में कंप्यूटर, इंटरनेट और ई-लाइब्रेरी की सुविधा उपलब्ध हो, तो आर्थिक रूप से कमजोर वर्ग के विद्यार्थी भी डिजिटल युग से जुड़ सकते हैं।

प्रतियोगी परीक्षार्थियों के लिए सार्वजनिक पुस्तकालय आज भी प्रेरणास्थल हैं। कोटा और अजमेर जैसे शहरों में हजारों विद्यार्थी नियमित रूप से पुस्तकालयों में अध्ययन करते हैं। शांत वातावरण और संदर्भ पुस्तकों की उपलब्धता उन्हें एकाग्रता प्रदान करती है। बेंगलूरु में सैकड़ों पुस्तकालय हैं, जिनमें बड़ी संख्या में पंजीकृत सदस्य हैं और उनमें अधिकांश विद्यार्थी हैं। यह तथ्य दर्शाता है कि यदि पुस्तकालय आधुनिक सुविधाओं से युक्त हों तो युवा वर्ग उनसे जुड़ने में रुचि रखता है। पुस्तकालयों की प्रासंगिकता केवल शैक्षणिक दृष्टि से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। ये हमारी साहित्यिक धरोहर, ऐतिहासिक दस्तावेज और वैचारिक परंपराओं को सुरक्षित रखते हैं। डिजिटल माध्यमों की त्वरित और क्षणभंगुर प्रकृति के बीच पुस्तकालय स्थायित्व का प्रतीक हैं। यहां उपलब्ध सामग्री सत्यापन योग्य और विश्वसनीय होती है, जो युवाओं को भ्रामक सूचनाओं से बचाती है। आज जब सोशल मीडिया पर अप्रमाणित जानकारी का प्रसार तीव्र गति से होता है, तब पुस्तकालय प्रमाणिक ज्ञान के स्रोत के रूप में और भी महत्वपूर्ण हो जाते हैं।

केंद्र सरकार द्वारा पुस्तकालयों के सुदृढ़ीकरण हेतु राष्ट्रीय स्तर पर पहल की गई है। राष्ट्रीय लाइब्रेरी मिशन के अंतर्गत राज्यों में केंद्रीय और जिला पुस्तकालयों को वित्तीय सहायता प्रदान करने का प्रावधान है। यह प्रयास स्वागतयोग्य है, परंतु इसकी सफलता राज्य सरकारों की सक्रियता और समाज की सहभागिता पर निर्भर करती है। यदि पुस्तकालय कानून, बुनियादी ढांचा और फंडिंग की व्यवस्था होने के बावजूद अपेक्षित ध्यान न मिले, तो उनका विकास बाधित हो जाता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि पुस्तकालयों को केवल परंपरा के प्रतीक के रूप में न देखा जाए, बल्कि उन्हें डिजिटल युग के अनुरूप विकसित किया जाए। पारंपरिक पुस्तकों के साथ-साथ ई-कंटेंट, डिजिटल डेटाबेस और ऑनलाइन संसाधनों को समाहित कर पुस्तकालयों को ज्ञान के समग्र केंद्र के रूप में स्थापित किया जाना चाहिए। विद्यालयों और महाविद्यालयों के विद्यार्थियों को पुस्तकालय से जोड़ने के लिए विशेष अभियान चलाए जाने चाहिए। डिजिटल साक्षरता कार्यक्रमों के माध्यम से युवाओं को सही और गलत जानकारी में अंतर करने की क्षमता प्रदान की जानी चाहिए।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि डिजिटल युग में सार्वजनिक पुस्तकालयों की आवश्यकता समाप्त नहीं हुई है, बल्कि उनका स्वरूप परिवर्तित हुआ है। ई-कंटेंट युवाओं को नई दिशा दे रहा है, परंतु उस दिशा को संतुलित और सार्थक बनाने के लिए पुस्तकालयों का शांत, अनुशासित और ज्ञानपूर्ण वातावरण अनिवार्य है। यदि हम चाहते हैं कि हमारी युवा पीढ़ी विवेकशील, संस्कारित और जिम्मेदार नागरिक बने, तो हमें पुस्तकालयों को सशक्त बनाना होगा। पुस्तकालय और ई-कंटेंट का समन्वय ही भविष्य की ज्ञान-संस्कृति को सुदृढ़ और समृद्ध बना सकता है।

कांतिलाल मांडोत

पंच. कुनः एक खिलौने की गोद में मां की ममता तलाशता नन्हा बंदर

जापान के इचिकावा सिटी जूलॉजिकल एंड बॉटनिकल गार्डन्स की चहारदीवारी के भीतर जन्मा एक नन्हा जापानी मैकाक जिसे दुनिया आज श्पंच.कुनश् के नाम से जानती हैए आधुनिक समय में जीव संवेदनाओं और प्राकृतिक संघर्ष की एक जीवंत मिसाल बनकर उभरा है। जुलाई 2025 में जब इस नन्हे बंदर ने पहली बार अपनी आँखें खोली होंगीए तो उसने एक ऐसे सामाजिक ढांचे की उम्मीद की होगी जहाँ मां की गर्माहट और समूह की सुरक्षा सर्वोपरि होती हैए लेकिन नियति ने उसके लिए एक अलग ही पटकथा लिख रखी थी। जन्म के कुछ ही घंटों बाद उसकी मां द्वारा उसे त्याग दिए जाने की घटना ने न केवल चिड़ियाघर के प्रशासन को चौंकाया बल्कि वन्यजीव प्रेमियों के बीच एक गहरी चिंता भी पैदा कर दी। जापानी मैकाकए जिन्हें हम अक्सर श्स्नो मंकीश् के रूप में जानते हैंए अपनी जटिल सामाजिक संरचना और मां.बच्चे के अटूट बंधन के लिए प्रसिद्ध हैं। ऐसे में एक नवजात का अनाथ हो जाना उसके अस्तित्व पर ही प्रश्नचिन्ह खड़ा कर देता है। पंच.कुन की कहानी यहीं से एक भावनात्मक मोड़ लेती है जब चिड़ियाघर के कर्मचारियों ने उसके जीवन में एक श्स्टफ्ड ऑरंगुटान खिलौनेश् को शामिल किया। यह खिलौना देखते ही देखते पंच की दुनिया का केंद्र बन गयाए और यहीं से शुरू हुई एक ऐसी यात्रा जिसने इंटरनेट पर लाखों लोगों की आंखों को नम कर दिया।

पंच.कुन और उसके इस भूरे रंग के खिलौने के बीच का बंधन केवल एक तस्वीर या वीडियो तक सीमित नहीं हैए बल्कि यह प्राइमेट मनोविज्ञान के उन गहरे रहस्यों को उजागर करता है जिन्हें दशकों पहले मनोवैज्ञानिक हैरी हार्लो ने अपने प्रयोगों में सिद्ध किया था। हार्लो के प्रयोगों ने दिखाया था कि एक बच्चा बंदर भोजन देने वाली कठोर तार की मां के बजाय रेशमी कपड़े वाली मां को चुनता हैए क्योंकि जीवों के लिए शारीरिक पोषण से कहीं अधिक महत्वपूर्ण भावनात्मक सुरक्षा और स्पर्श का सुख होता है। पंच.कुन के मामले में भी यही हुआ। वह नन्हा बंदर अपने इस खिलौने को महज़ एक वस्तु नहीं मानताए बल्कि वह उसे हर जगह अपने साथ लेकर घूमता है। जब वह खाता है ए तो खिलौना उसके पास होता हैए जब वह सोता है ए तो वह उसे अपनी छाती से सटाकर रखता हैए और जब वह डरता हैए तो वह उसी बेजान कपड़े के टुकड़े में अपनी जान तलाशता है। सोशल मीडिया पर वायरल हुए वीडियो में जब हम पंच को अपने से लगभग दोगुने बड़े खिलौने को घसीटते हुए या उसे गोद में उठाकर चलते हुए देखते हैंए तो वह दृश्य सहज ही मानवीय संवेदनाओं को झकझोर देता है। यह हमें याद दिलाता है कि मां का अभाव किसी भी प्रजाति के लिए कितना बड़ा शून्य पैदा कर देता है।

जैसे.जैसे पंच.कुन बड़ा हो रहा हैए चिड़ियाघर के सामने सबसे बड़ी चुनौती उसे वापस उसके अपने समाज यानी बंदरों के समूह में एकीकृत करने की है। हाल ही में वायरल हुए एक वीडियो ने इस प्रक्रिया की जटिलता और क्रूरता के दावों को जन्म दियाए जब पंच को एक वयस्क मादा बंदर द्वारा डांटे और घसीटे हुए देखा गया। इंटरनेट पर कई लोगों ने इसे पशु क्रूरता करार दिया लेकिन यदि हम वैज्ञानिक दृष्टिकोण से देखेंए तो यह पंच के सामाजीकरण का एक अनिवार्य हिस्सा था। चिड़ियाघर के विशेषज्ञों ने स्पष्ट किया कि पंच जब समूह के दूसरे बच्चों के पास जाने की कोशिश करता हैए तो उसे अभी तक सामाजिक संकेतों की समझ नहीं है। एक मां के बिना पले बढ़े होने के कारण उसे यह नहीं पता कि कब रुकना है और कब दूरी बनाए रखनी है। जब वह किसी दूसरे बच्चे के पास गया और उस बच्चे की मां ने उसे दूर धकेलाए तो वह वास्तव में बंदरों के समाज का श्अनुशासनश् था। यह अनुशासन ही उसे भविष्य में एक स्वतंत्र और सशक्त वयस्क बंदर बनाने में मदद करेगा। हालांकिए उस डांट के बाद पंच का तुरंत भागकर अपने ऑरंगुटान खिलौने से लिपट जाना यह दर्शाता है कि वह अभी भी भावनात्मक रूप से कितना कमजोर है और वह खिलौना उसके लिए एक सुरक्षित पनाहगाह की तरह काम कर रहा है।

इस पूरी घटना ने श्अटैचमेंट थ्योरीश् और श्ट्रांजिशनल ऑब्जेक्ट्सश् जैसे मनोवैज्ञानिक विषयों पर एक नई बहस छेड़ दी है। जिस तरह मानव शिशु अपने माता.पिता की अनुपस्थिति में किसी कंबल या टेडी बियर से गहरा जुड़ाव महसूस करते हैं ताकि उन्हें सुरक्षा का एहसास होए पंच.कुन भी उसी दौर से गुजर रहा है। लेकिन यहाँ एक महत्वपूर्ण सवाल यह भी उठता है कि क्या मानवीय हस्तक्षेप और खिलौनों का यह सहारा उसे प्राकृतिक रूप से सक्षम बना पाएगाघ् इचिकावा चिड़ियाघर का स्टाफ इस दिशा में बेहद संवेदनशीलता से काम कर रहा है। वे श्सॉफ्ट रिलीजश् की प्रक्रिया अपना रहे हैंए जहाँ पंच को धीरे.धीरे समूह के साथ रहने का समय दिया जाता है ताकि वह खिलौने पर अपनी निर्भरता कम कर सके। यह एक लंबी और कठिन प्रक्रिया हैए क्योंकि एक बंदर जो अपनी शुरुआती महीनों में बंदरों की भाषा नहीं सीख पाताए उसे बाद में समूह का हिस्सा बनने में काफी संघर्ष करना पड़ता है। पंच की कहानी केवल एक अनाथ बंदर की कहानी नहीं हैए बल्कि यह वर्तमान समय में हमारे अपने बच्चों और समाज की स्थिति का भी प्रतिबिंब है। जिस तरह पंच एक डिजिटल और कृत्रिम दुनिया में अपने खिलौने में मां को तलाश रहा हैए कहीं न कहीं आधुनिक मानव समाज भी असली भावनात्मक जुड़ाव की जगह गैजेट्स और निर्जीव वस्तुओं में सांत्वना खोज रहा है।

पंच.कुन की इस लोकप्रियता ने वन्यजीव संरक्षण और चिड़ियाघरों की भूमिका पर भी सकारात्मक प्रकाश डाला है। अक्सर चिड़ियाघरों को जानवरों को कैद करने वाली जगह के रूप में देखा जाता हैए लेकिन पंच जैसे मामलों में ये संस्थान जीवन रक्षक की भूमिका निभाते हैं। यदि चिड़ियाघर के कीपर्स ने हस्तक्षेप न किया होताए तो पंच अपनी मां के त्याग के कुछ ही घंटों बाद दम तोड़ देता। आज वह सुरक्षित हैए स्वस्थ है और दुनिया भर के लोगों के लिए सहानुभूति का प्रतीक बना हुआ है। उसके माध्यम से लोग जापानी मैकाक प्रजाति के बारे में जान रहे हैं और उनके संरक्षण की आवश्यकता को समझ रहे हैं। जलवायु परिवर्तन और बढ़ते शहरीकरण के कारण इन बंदरों के प्राकृतिक आवास कम हो रहे हैंए जिससे उनके व्यवहार में तनाव और इस तरह की घटनाएं ;मां द्वारा बच्चे को छोड़नाद्ध बढ़ सकती हैं। पंच की कहानी हमें यह संदेश देती है कि प्रकृति में हर जीव को प्यार और सुरक्षा की आवश्यकता होती हैए और जब प्रकृति अपना हाथ खींच लेती हैए तो करुणा ही वह सेतु बनती है जो जीवन को बचाए रखती है।

अंततःए पंच.कुन की यात्रा अभी खत्म नहीं हुई है। वह हर दिन सीख रहा हैए गिर रहा है और फिर से संभल रहा है। उसका वह ऑरंगुटान खिलौना शायद कुछ समय बाद पुराना होकर फट जाए या उसे समूह के दबाव में छोड़ना पड़ेए लेकिन उस खिलौने ने उसे वह प्रारंभिक आत्मविश्वास दिया है जो उसे जीने के लिए चाहिए था। यह कहानी हमें सिखाती है कि करुणा किसी भाषा या प्रजाति की मोहताज नहीं होती। एक बेजान खिलौना भी एक मरते हुए जीव के लिए संजीवनी बन सकता है। भविष्य में जब पंच.कुन पूरी तरह से अपने समूह का हिस्सा बन जाएगा और शायद अपने खिलौने को पीछे छोड़ देगाए तब भी उसकी यह संघर्ष गाथा दुनिया को यह याद दिलाती रहेगी कि कठिन से कठिन समय में भी अगर सहारा मिल जाएए तो जीवन फिर से मुस्कुरा सकता है। पंच.कुन आज केवल जापान का सितारा नहीं हैए बल्कि वह उन सभी के लिए आशा की एक किरण है जो अपनी लड़ाई अकेले लड़ रहे हैं और किसी न किसी रूप में अपनी श्सुरक्षित पनाहगाहश् की तलाश में हैं। उसकी मासूमियत और उसके अटूट बंधन ने यह साबित कर दिया है कि संवेदनाएं ही ब्रह्मांड की सबसे शक्तिशाली कड़ी हैं।

महेन्द्र तिवारी

संपादकीय

एआई ईपैक्ट और महिलाओं से जुड़ी प्रचुर संभावनाएं

महिलाओं को तकनीकी प्रशिक्षण की ज्यादा जरूरत।

आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस अर्थात एआई आज केवल एक तकनीकी उपकरण नहीं रह गया है, बल्कि यह सामाजिक संरचनाओं, आर्थिक अवसरों और शक्ति संतुलन को पुनर्परिभाषित करने वाला परिवर्तनकारी माध्यम बन चुका है। इस परिवर्तन के केंद्र में यदि किसी वर्ग के लिए सर्वाधिक संभावनाएँ छिपी हैं तो वह है महिला वर्ग, क्योंकि सदियों से अवसरों की असमानता, संसाधनों तक सीमित पहुँच और निर्णय-निर्माण में कम भागीदारी जैसी बाधाओं का सामना करने वाली महिलाओं के लिए एआई एक नई ऊर्जा, नई दिशा और नया इम्पैक्ट लेकर आया है।

विश्व स्तर पर उपलब्ध नवीन आँकड़े यह संकेत देते हैं कि तकनीकी क्षेत्र में महिलाओं की भागीदारी अभी भी संतोषजनक नहीं है, विभिन्न अंतरराष्ट्रीय अध्ययनों के अनुसार एआई से जुड़े कार्यक्षेत्रों में महिलाओं की हिस्सेदारी लगभग 28 से 30 प्रतिशत के बीच है, जबकि नेतृत्वकारी भूमिकाओं में यह प्रतिशत और भी कम हो जाता है, भारत में प्रकाशित रिपोर्ट के अनुसार वर्तमान में लगभग 20 प्रतिशत एआई पेशेवर महिलाएँ हैं, परंतु यदि प्रशिक्षण, डिजिटल पहुँच और नीतिगत समर्थन को व्यापक बनाया जाए तो 2027 तक इस संख्या के चार गुना तक बढ़ने की संभावना व्यक्त की गई है। यह आँकड़ा केवल सांख्यिकीय वृद्धि का संकेत नहीं बल्कि सामाजिक शक्ति संतुलन में संभावित बड़े बदलाव का संकेत है। एआई इम्पैक्ट का सबसे महत्वपूर्ण पहलू यह है कि यह कौशल आधारित अर्थव्यवस्था को बढ़ावा देता है। जहाँ पारंपरिक लैंगिक पूर्वाग्रह अपेक्षाकृत कम प्रभावी होते हैं। ऑनलाइन लर्निंग प्लेटफॉर्म, वर्चुअल ट्यूटर, एआई-आधारित भाषा अनुवाद उपकरण और कोडिंग सिमुलेटर उन महिलाओं के लिए वरदान सिद्ध हो रहे हैं जो भौगोलिक, सामाजिक या पारिवारिक कारणों से औपचारिक संस्थानों तक नहीं पहुँच पाती थीं। इस संदर्भ मे यूनेस्को ने स्पष्ट रूप से कहा है कि यदि एआई को समावेशी दृष्टिकोण के साथ विकसित किया जाए तो यह महिलाओं की कार्यभागीदारी और नेतृत्व क्षमता को अभूतपूर्व रूप से बढ़ा सकता है, इसी प्रकार डिजिटल ऑर्गेनाइजेशन ने अपनी रिपोर्टों में उल्लेख किया है कि डिजिटल अर्थव्यवस्था में लैंगिक समानता सुनिश्चित करना वैश्विक विकास की अनिवार्य शर्त है।

एआई इम्पैक्ट का दूसरा महत्वपूर्ण आयाम कार्यस्थल पर महिलाओं की आवाज़ को सशक्त करना है। मीटिंग एनालिटिक्स कंपनी की एक हालिया रिपोर्ट में पाया गया कि एआई-सहायता प्राप्त वर्चुअल मीटिंग टूल्स के उपयोग से महिलाएँ औसतन 9 प्रतिशत अधिक बोलती हैं, क्योंकि एआई आधारित नोट-टेकिंग और समय प्रबंधन उपकरण उन्हें बिना बाधा अपनी बात रखने का अवसर देते हैं। यह परिवर्तन प्रतीकात्मक नहीं बल्कि संरचनात्मक है, क्योंकि निति-निर्माण में आवाज़ की उपस्थिति ही शक्ति का पहला चरण होती है। ग्रामीण और अर्धशहरी भारत में एआई इम्पैक्ट का एक और आयाम उभर कर आया है जहाँ डिजिटल सखी, एआई चैटबॉट और स्मार्ट कृषि सलाह प्लेटफॉर्म महिलाओं को उद्यमिता की दिशा में प्रेरित कर रहे हैं। स्वयं सहायता समूहों से जुड़ी महिलाएँ अब एआई आधारित बाजार विश्लेषण, मूल्य पूर्वानुमान और ग्राहक पहुँच टूल्स का उपयोग कर अपने उत्पादों को व्यापक बाजार तक पहुँचा पा रही हैं इससे आय में वृद्धि के साथ आत्मविश्वास भी बढ़ रहा है। यह आर्थिक सशक्तिकरण सामाजिक सशक्तिकरण में रूपांतरित हो रहा है; स्वास्थ्य क्षेत्र में एआई इम्पैक्ट और भी गहरा है। मातृ स्वास्थ्य निगरानी, पोषण परामर्श, मानसिक स्वास्थ्य चैटबॉट और प्रारंभिक रोग पहचान प्रणाली ग्रामीण महिलाओं के लिए जीवनरक्षक सिद्ध हो रही हैं, जहाँ पहले विशेषज्ञ डॉक्टरों की पहुँच कठिन थी वहाँ अब मोबाइल आधारित एआई समाधान प्राथमिक मार्गदर्शन उपलब्ध करा रहे हैं। इससे स्वास्थ्य असमानताओं में कमी आने की संभावना है; किंतु एआई का यह सकारात्मक पक्ष तभी स्थायी होगा जब इसके नकारात्मक आयामों को भी गंभीरता से समझा जाए, अनेक अध्ययनों में यह पाया गया है कि लगभग 40 प्रतिशत एआई मॉडल किसी न किसी रूप में लैंगिक पूर्वाग्रह से प्रभावित होते हैं, यदि प्रशिक्षण डेटा असंतुलित है तो निर्णय भी असंतुलित होंगे, यही कारण है कि संयुक्त राष्ट्र संघ से संबद्ध एजेंसियों ने चेतावनी दी है कि डिजिटल हिंसा, डीपफेक और ऑनलाइन उत्पीड़न की घटनाएँ महिलाओं को प्रभावित कर रही हैं। अनुमान है विश्व की लगभग 38 प्रतिशत महिलाएँ किसी न किसी रूप में ऑनलाइन हिंसा का अनुभव कर चुकी हैं। अतः एआई इम्पैक्ट को सकारात्मक बनाए रखने के लिए सख्त डेटा नैतिकता, एल्गोरिथमिक पारदर्शिता और लैंगिक संवेदनशील नीति ढाँचा अत्यंत आवश्यक है।एआई महिलाओं के लिए केवल नौकरी का साधन नहीं बल्कि नेतृत्व का माध्यम भी बन सकता है । डेटा-आधारित निर्णय प्रणाली राजनीतिक और प्रशासनिक क्षेत्र में पारदर्शिता बढ़ा सकती है जिससे महिलाओं की भागीदारी मजबूत हो, जब निर्णय तथ्यों और विश्लेषण पर आधारित होंगे तो पूर्वाग्रहों की गुंजाइश घटेगी, इसके अतिरिक्त फ्रीलांसिंग, कंटेंट क्रिएशन, डिजिटल मार्केटिंग, एआई ट्रेनिंग और माइक्रो-टास्किंग जैसे नए क्षेत्रों ने उन महिलाओं को भी आर्थिक स्वतंत्रता दी है जो पारंपरिक नौकरी संरचना में शामिल नहीं हो पाती थीं। यह लचीला कार्य-मॉडल मातृत्व और पारिवारिक दायित्वों के साथ संतुलन बनाने में सहायक है। एआई इम्पैक्ट का मनोवैज्ञानिक पहलू भी उल्लेखनीय है, जब महिलाएँ तकनीक की उपभोक्ता मात्र न रहकर उसकी निर्माता और नवोन्मेषक बनती हैं तो आत्मविश्वास और पहचान दोनों का विस्तार होता है, विश्वविद्यालयों और स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र में महिला सहभागिता बढ़ाने के प्रयास यह संकेत देते हैं कि आने वाले दशक में एआई क्षेत्र में महिला नेतृत्व की नई पीढ़ी उभरेगी; निष्कर्षतः एआई एक दोधारी तलवार अवश्य है परंतु यदि इसे समावेशी नीति, लैंगिक संतुलन, डिजिटल साक्षरता और नैतिक नियमन के साथ आगे बढ़ाया जाए तो इसका इम्पैक्ट महिलाओं के लिए ऐतिहासिक परिवर्तन का माध्यम बन सकता है, यह परिवर्तन केवल आर्थिक नहीं बल्कि सामाजिक, बौद्धिक और राजनीतिक शक्ति संतुलन का परिवर्तन होगा, जहाँ महिला केवल भागीदार नहीं बल्कि निर्णयकर्ता, निर्माता और नेतृत्वकर्ता के रूप में स्थापित होगी, और यही एआई की वास्तविक सफलता होगी कि वह तकनीक को मानवता और समानता की दिशा में प्रयुक्त करे, क्योंकि जब महिला सशक्त होती है तो समाज सशक्त होता है और जब समाज सशक्त होता है तो राष्ट्र प्रगतिशील बनता है।

संजीव ठाकुर

24 फरवरी 2002: नरेंद्र मोदी के राजनीतिक उत्कर्ष का प्रज्वलित आरंभ

[24 फरवरी 2002: लोकतंत्र में जनादेश की सर्वोच्चता का दिवस]
[प्रचारक से पुरुषार्थी शासक बने नरेंद्र मोदी: 24 फरवरी का अमर अध्याय]

24 फरवरी 2002–यह तिथि केवल एक उपचुनाव की घोषणा नहीं थी, यह भारतीय लोकतंत्र के विस्तृत आकाश में उगते एक नए सूर्य का प्रथम उषाकाल था। वडनगर की साधारण पृष्ठभूमि से निकला एक अनुशासित प्रचारक, नरेंद्र मोदी, जब राजकोट की राजकोट-द्वितीय विधानसभा सीट से पहली बार विधायक निर्वाचित हुआ, तब वह क्षण प्रतीक बना–संघर्ष से शिखर तक की यात्रा का, विचार से शासन तक के रूपांतरण का। 45,298 मतों के साथ प्राप्त जनादेश केवल जीत का प्रमाण नहीं था; वह जनविश्वास का उद्घोष था। 14,728 मतों का अंतर उस दौर की राजनीतिक उथल-पुथल के बीच अटूट आस्था का संकेत बना। यह वही क्षण था जिसने 'प्रचारक से शासक' बनने की दिशा को स्थिरता दी और एक ऐसी यात्रा का प्रारंभ किया, जिसने आगे चलकर राष्ट्रीय परिदृश्य को गहराई से प्रभावित किया।

उस समय गुजरात का राजनीतिक वातावरण अनिश्चितताओं से भरा था। अक्टूबर 2001 में केशुभाई पटेल के स्थान पर मोदी को मुख्यमंत्री का दायित्व सौंपा गया, परंतु वे विधानसभा के सदस्य नहीं थे। संवैधानिक व्यवस्था के अनुसार 6 महीनों के भीतर सदन में प्रवेश आवश्यक था। इसीलिए गुजरात विधान सभा की सदस्यता प्राप्त करने के लिए उपचुनाव अनिवार्य बना। सीट खाली कर मार्ग प्रशस्त किया वजुभाई वाला ने। विपक्ष ने इसे अवसर के रूप में देखा और कांग्रेस प्रत्याशी अश्विनभाई मेहता को चुनावी मैदान में उतारा गया। आरोपों, आक्षेपों और तीखे प्रचार के बीच यह चुनाव केवल एक सीट का नहीं, नेतृत्व की वैधता का प्रश्न बन गया। किंतु मतदाता ने असमंजस नहीं, निर्णायक नेतृत्व चुना–और यही इस जीत की सबसे बड़ी शक्ति थी।

यह विजय आकस्मिक नहीं थी; इसके पीछे वर्षों की तपस्या और संगठनात्मक साधना थी। किशोर अवस्था में राष्ट्रीय चेतना से प्रेरित होकर मोदी ने राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के पूर्णकालिक प्रचारक के रूप में स्वयं को समर्पित किया। अनुशासन, समयनिष्ठा और जनसंपर्क उनके व्यक्तित्व की पहचान बने। 1987 में उन्होंने भारतीय जनता पार्टी में सक्रिय भूमिका निभाई और संगठन विस्तार में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया। 1990 के दशक में रणनीतिक कौशल के कारण वे राष्ट्रीय स्तर पर प्रतिष्ठित हुए। किंतु चुनावी राजनीति का प्रत्यक्ष परीक्षण शेष था। राजकोट ने वह अवसर दिया, जहाँ वैचारिक प्रतिबद्धता और जनस्वीकृति का संगम हुआ। इसीलिए 24 फरवरी 2002 की जीत केवल मतगणना का परिणाम नहीं, बल्कि दीर्घकालीन विश्वास का प्रमाणपत्र बनी।

प्रचार अभियान के दौरान मोदी ने संवाद को हथियार बनाया। उन्होंने विकास, सुरक्षा और सुशासन को केंद्रीय विषय रखा। सभाओं में स्थानीय अपेक्षाओं को व्यापक दृष्टि से जोड़ा और प्रशासनिक स्पष्टता का आश्वासन दिया। विपक्ष ने वैचारिक प्रश्नों और अनुभव पर आक्षेप लगाए, किंतु मतदाता ने कार्यदृष्टि को प्राथमिकता दी। 57.32 प्रतिशत मत प्राप्त कर उन्होंने स्पष्ट जनादेश अर्जित किया, जबकि प्रतिद्वंद्वी को 38.68 प्रतिशत मत मिले। यह अंतर संख्यात्मक से अधिक मनोवैज्ञानिक था–इसने मुख्यमंत्री पद को वैधानिक स्थिरता दी। 25 फरवरी को शपथ ग्रहण के साथ सदन में उनका प्रवेश हुआ और शासन की दिशा को विधायी समर्थन मिला। यह क्षण लोकतंत्र में जनादेश की सर्वोच्चता का सजीव उदाहरण बना।

किन्तु यह विजय आसान समय में नहीं आई थी। 27 फरवरी 2002 को गोधरा की दुखद घटना और उसके बाद उपजे दंगों ने राज्य को गंभीर संकट में डाल दिया। प्रशासनिक क्षमता, राजनीतिक इच्छाशक्ति और सामाजिक संतुलन की कठोर परीक्षा हुई। राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय स्तर पर आलोचनाएँ उठीं, प्रश्नों की बौछार हुई। ऐसे समय में राजकोट से मिला विश्वास ही संबल बना। कानून-व्यवस्था की पुनर्स्थापना, पुनर्वास और दीर्घकालिक स्थिरता की दिशा में प्रयास किए गए। इसी कालखंड में आर्थिक पुनरुत्थान की रूपरेखा उभरी, जिसका विस्तार आगे चलकर वाइब्रेंट गुजरात जैसे निवेश सम्मेलनों में दिखाई दिया। औद्योगिक विकास, आधारभूत संरचना और ऊर्जा सुधारों ने राज्य को नए आत्मविश्वास से जोड़ा। इस परिवर्तन की आधारशिला राजकोट की वही पहली जीत थी।

राजकोट-द्वितीय की विजय ने नेतृत्व को आत्मविश्वास की स्थायी धुरी प्रदान की। 2002, 2007 और 2012 के विधानसभा चुनावों में लगातार सफलता ने प्रशासनिक मॉडल को स्थिरता दी। ग्रामीण विद्युतीकरण, सड़क विस्तार, कृषि वृद्धि और निवेश आकर्षण जैसे क्षेत्रों में परिणामों ने परिवर्तन का संकेत दिया। शासन में लक्ष्यनिर्धारण, समयबद्ध क्रियान्वयन और उत्तरदायित्व की शैली प्रमुख रही। इस क्रम में विकास-केंद्रित विमर्श को बल मिला, जिसने समर्थकों के बीच उन्हें निर्णायक और परिणामोन्मुख नेता के रूप में स्थापित किया। राजकोट से प्रारंभ यह यात्रा केवल पदोन्नति की कहानी नहीं थी; यह शासन-कार्य संस्कृति में बदलाव का प्रयास थी, जिसका प्रभाव राज्य की सीमाओं से परे गया।

राष्ट्रीय राजनीति में 2014 का वर्ष उसी क्रम का विस्तार माना गया। प्रधानमंत्री पद की शपथ ने उस यात्रा को राष्ट्रीय आयाम दिया, जिसकी प्रथम सीढ़ी राजकोट में रखी गई थी। संगठनात्मक अनुभव, प्रशासनिक प्रयोग और चुनावी विश्वसनीयता–इन तीन आधारों पर राष्ट्रीय नेतृत्व का निर्माण हुआ। अंतरराष्ट्रीय मंचों पर सक्रिय कूटनीति, आधारभूत संरचना पर बल और जनकल्याण योजनाओं की व्यापकता ने समर्थकों के बीच उनकी पहचान को विशिष्ट बनाया। आलोचनाओं और प्रतिस्पर्धा के बावजूद चुनावी सफलता का सिलसिला जारी रहा। इस दृष्टि से 24 फरवरी 2002 केवल अतीत का अध्याय नहीं, वर्तमान की निरंतरता का स्रोत है।

आज जब उस ऐतिहासिक दिन को स्मरण किया जाता है, तो वह तिथि समय की धूल में खोई घटना नहीं, बल्कि परिवर्तन की ज्वलंत प्रेरणा बनकर सामने आती है। राजकोट ने एक प्रचारक को विधायी मान्यता दी, और उसी से प्रशासनिक प्रयोगों की श्रृंखला प्रारंभ हुई। समर्थकों की दृष्टि में यह यात्रा साधारण पृष्ठभूमि से वैश्विक नेतृत्व तक पहुँचे व्यक्तित्व की अप्रतिम गाथा है–अथक परिश्रम, अटूट संकल्प और जनविश्वास से निर्मित। 24 फरवरी 2002 इसलिए अमर है, क्योंकि उसने संघर्ष को अवसर में, विचार को शासन में और विश्वास को विजय में रूपांतरित किया। वह दिन केवल एक जीत नहीं था; वह युगारंभ था–और उसकी गूँज आज भी भारतीय लोकतंत्र की धड़कनों में सुनाई देती है।

प्रो. आरके जैन 'अरिजीत'

स्वामी- स्वतंत्र प्रभात मीडिया, मुद्रक एवं प्रकाशक प्रीती शुक्ला द्वारा सुशीला स्टेडी बेल एकेडमी 117-मोहल्ला बिजय लक्ष्मी नगर परगना सौराचाद तहसील व जनपद सीतापुर से प्रकाशित तथा महावीर आफसेट 28, होनेट रोड लखनऊ से मुद्रित। सम्पादक रवि कुमार अवस्थी समाचार पत्र में तमे समस्त समाचार संवाददाताओं के अपने श्रोत एवं संकलन हैं, जिनसे सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है। **नोट:** उपरोक्त सभी पद अवैतनिक एवं स्वयंसेवी हैं तथा समाचार पत्र से सम्बंधित सारे विवादों का न्याय क्षेत्र सीतापुर होगा। R.NI NO. UPHIN/2012/43078 मो0 नं0-9511151254, E-Mail: news@swatantraprabhat.com

संक्षिप्त खबरें

शादी समारोह में शामिल होकर वापस घर लौट रहे सड़क हादसे में युवक की मौत

महराजगंज रायबरेली। चंदापुर थाना क्षेत्र के सिकंदरपुर के महाबलगंज गांव निवासी पवन कुमार उर्फ पप्पू 35 वर्ष की बीती रात सड़क हादसे में मौत हो गई। बाइक सवार पवन कुमार रायबरेली में अपनी भांजी के शादी समारोह में शामिल होकर वापस घर लौट रहे थे, तभी यह दुर्घटना हुई। जानकारी के अनुसार, पवन कुमार को पूरे अवसेरी मजरे मोन स्थित पराग डेयरी के सामने एक अज्ञात वाहन ने टक्कर मार दी। हादसे में घायल बाइक सवार युवक को लोगों ने एम्बुलेंस की मदद से सीएचसी पहुंचाया। जहां से उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। वहां से इलाज के लिए ट्रामा सेंटर ले जाते समय बाइक सवार युवक की मौत हो गई। सूचना पर पहुंची पुलिस ने शव को कब्जे में लेकर पोस्टमार्टम के लिए भेज दिया है। इस दुखद घटना के बाद परिवार में मातम पसर गया है। मृतक की पत्नी का रो-रोकर बुरा हाल है। घटना की सूचना मिलने पर भाजपा जिला उपाध्यक्ष जन्मेजय सिंह व प्रधान डब्बू सिंह,एवम प्रधान प्रतिनिधि धर्मराज पासी ,बाबा राम केवल अनशनकारी पीड़ित परिवार के घर पहुंचे और उन्हें सांत्वना दी।

चंडीगढ़ में पूर्व प्रधान की बहू की निर्मम हत्या, शव पहुंचते ही गांव में मचा कोहराम

अकेली पाकर पड़ोसी युवक ने किया हमला, धारदार हथियार और हथौड़े से वार कर उतारा मौत के घाट

लालगंज (रायबरेली)। क्षेत्र के मुबारकपुर गांव के पूर्व प्रधान श्रीपाल पासी की बहू की दो दिन पहले चंडीगढ़ में निर्मम हत्या कर दी गई। सोमवार को जैसे ही मृतका का शव गांव पहुंचा, पूरे गांव में मातम छा गया। परिजनों का रो-रोकर बुरा हाल है और गांव में सन्नाटा पसरा हुआ है। मृतका के ससुर श्रीपाल पासी ने बताया कि उनके तीन बेटे हैं। बड़ा बेटा कुलदीप सेना में तैनात है, छोटा बेटा संदीप गांव में रहता है, जबकि मंझला बेटा प्रदीप चंडीगढ़ में परिवार के साथ रहकर काम करता था। घटना के समय प्रदीप काम पर गया हुआ था और दोनों बच्चे स्कूल में थे। घर पर सीमा (35) अकेली थी। इसी दौरान पड़ोस का एक युवक घर में घुस आया और महिला के साथ अश्लील हरकत करने की कोशिश की। महिला द्वारा विरोध करने पर आरोपी ने धारदार हथियार और हथौड़े से ताबड़तोड़ हमला कर दिया, जिससे मौके पर ही उसकी मौत हो गई। सूचना मिलते ही पति प्रदीप घर पहुंचा। खून से लथपथ पत्नी को देख वह स्तब्ध रह गया। मृतका के एक बेटा और एक बेटी हैं। दोनों बच्चों के सिर से मां का साया उठ गया। सोमवार को जब शव मुबारकपुर गांव पहुंचा तो परिवार में कोहराम मच गया। ग्रामीणों की आंखें नम हैं और पूरे गांव में शोक का माहौल बना हुआ है। पुलिस मामले की जांच में जुटी है।

स्वदेशी जागरण मंच का स्वावलंबन केन्द्र खोला गया

लालगंज (रायबरेली)। कस्बे के निराला नगर में स्वदेशी जागरण मंच की ओर से स्वावलम्बन केन्द्र की शुरुआत हुई। कार्यक्रम में करीब 150 से अधिक युवक, व्यापारी और स्थानीय नागरिक शामिल हुए। केन्द्र का उद्घाटन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के विभाग प्रचारक अमित राजावत ने किया। उन्होंने कहा कि आत्मनिर्भर भारत का सपना स्वदेशी व्यवस्था से ही साकार होगा। स्थानीय उत्पादन को बढ़ावा देना समय की मांग है। लघु उद्योग और स्वरोजगार को मजबूत करना जरूरी है। युवाओं को राष्ट्र निर्माण में आगे आना होगा। प्रांत संयोजक स्वदेशी जागरण मंच अमित सिंह वत्स ने युवाओं को उद्यमी बनने का संदेश दिया। उन्होंने कहा कि नौकरी मांगने से बेहतर है नौकरी देने वाला बनना। स्वावलम्बन केन्द्र युवाओं को प्रशिक्षण देगा। उन्हें सरकारी योजनाओं से जोड़ा जाएगा। नए उद्यम शुरू करने में मार्गदर्शन दिया जाएगा। जिला संयोजक डॉ. अनुभव श्रीवास्तव ने कहा कि यह केन्द्र स्थायी रोजगार परामर्श मंच की तरह काम करेगा। कौशल विकास पर जोर दिया जाएगा। आर्थिक सशक्तिकरण को बढ़ावा मिलेगा। स्थानीय व्यापारियों को संगठित किया जाएगा। कार्यक्रम में स्वरोजगार मार्गदर्शन सत्र आयोजित हुआ। निःशुल्क स्वास्थ्य शिविर भी लगाया गया। लोगों ने पहल की सराहना की। अंत में डॉ. अविनाश सिंह ने सभी का आभार व्यक्त किया।

कृषि महाविद्यालय में फिर लापरवाही के चलते परीक्षा टली

● परीक्षा के दौरान प्रथम वर्ष के विषय प्रश्न पत्र के बजाय बांट दिए द्वितीय वर्ष के विषय प्रश्न पत्र सिलेबस से इतर प्रश्न देख छात्र-छात्राओं में मची अफरा तफरी

● विश्वविद्यालय की जिम्मेदार अधिकारियों की कार्यशैली पर अब उठने लगे सवाल विश्वविद्यालय के जिम्मेदार मामले को लेकर परस्पर एक दूसरे के सिर फोड़ रहे ठीकरा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

मिल्कीपुर अयोध्या- आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज में चल रही सेमेस्टर परीक्षा एक बार फिर कृषि महाविद्यालय के जिम्मेदार अधिकारियों एवं कर्मचारियों के लापरवाही की भेंट चढ़ गई। निर्धारित विषय प्रश्न पत्र की बजाय द्वितीय वर्ष के छात्र-छात्राओं का प्रश्न पत्र देख परीक्षार्थी हैरान हो गए और कच्छ निरीक्षक से शिकायत की तब मामले में तूल पकड़ा।इसके बाद विश्वविद्यालय प्रशासन ने आनन- फानन में प्रथम पाली की परीक्षा निरस्त कर दी। हालांकि अभी उक्त विषय के परीक्षा का दूसरा कार्यक्रम नहीं जारी हो सका है। उधर दूसरी ओर इस भारी लापरवाही का ठीकरा विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार सहित कृषि अधिष्ठाता तक परस्पर एक दूसरे को बताते हुए किनारा कस रहे हैं। प्राप्त जानकारी के अनुसार आचार्य नरेंद्र देव कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय कुमारगंज के अधीन कृषि महाविद्यालय अंतर्गत एग्रीकल्चर बिजनेस मैनेजमेंट प्रथम वर्ष के छात्र-छात्राओं की परीक्षा एबीएम-506 (Agriculture food and marketing- I)विषय की सुनिश्चित थी। किंतुपरीक्षा कच्छ में मौजूद छात्र-छात्राओं को एबीएम-507(Agriculture food and marketing- II) प्रश्न पत्र वितरित कर दिया गया।सेमेस्टर से अतिरिक्त प्रश्न देख छात्र-छात्राओं ने परीक्षा कक्षा में मौजूद शिक्षकों से शिकायत की। फिर क्या था विश्वविद्यालय में अफरा तफरी का माहौल बन गया। थक हारकर विश्वविद्यालय की जिम्मेदार अधिकारियों ने सोमवार की परीक्षा निरस्त कर दी। हालांकि विश्वविद्यालय की ओर से अभी उक्त विषय के परीक्षा की दूसरी तिथि निर्धारित नहीं की गई है। उधर कृषि अधिष्ठाता डॉ धीरेंद्र कुमार सिंह ने बताया कि प्रश्न पत्र व्यवस्था की जिम्मेदारी रजिस्टर की होती है। उधर दूसरी ओर विश्वविद्यालय के रजिस्टर डॉ पीएस परमानिक का कहना है किप्रश्न पत्र से कोई दिक्कत नहीं थी, केवल एक प्रोफेसर साहब डॉ महेंद्र सिंह के कहने पर परीक्षा टाली गई है। इस प्रकार से विश्वविद्यालय का कोई भी जिम्मेदार अधिकारी लगातार हो रही लापरवाही एवं चूक की जिम्मेदारी नहीं ले रहा है। जिसके चलते छात्र-छात्राओं को परीक्षा जैसे महत्वपूर्ण कार्यक्रम में दो दुश्वारियों का सामना करना पड़ रहा है।

एक दिवसीय ब्लॉक स्तरीय संगोष्ठी एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम आयोजित

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

महराजगंज रायबरेली। कस्बा स्थित डाक-बंगले के सभागार में ग्राम प्रधान/स्थानीय प्राधिकारी/निकाय के सदस्यों व प्रधानाध्यापकों की एक दिवसीय ब्लॉक स्तरीय संगोष्ठी एवं उन्मुखीकरण कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में नरायनपुर ग्राम प्रधान प्रदीप कुमार को अपने बेटे का दाखिला प्राथमिक विद्यालय जुनिहा में कराए जाने के लिए सम्मानित किया गया। वही मोन ग्राम सभा के प्राथमिक विद्यालय जुगराजपुर में कायाकल्प के 19 पैरामीटर पूरे करने के लिए प्रमाणपत्र देकर सम्मानित किया गया। सोमवार को आयोजित उन्मुखीकरण कार्यशाला का बतौर मुख्यअतिथि चेयरमैन प्रतिनिधि प्रभात साहू ने मां सरस्वती की प्रतिमा पर माल्यार्पण एवं दीप प्रज्ज्वलित कर शुभारंभ किया। इसके पश्चात् विशिष्ट अतिथि खण्ड विकास अधिकारी वर्षा सिंह द्वारा संगोष्ठी के उद्देश्यों, डीबीटी, निपुण लक्ष्य व कायाकल्प योजना की अद्यतन प्रगति रिपोर्ट को प्रोजेक्टर के माध्यम से प्रस्तुत किया गया। खंड शिक्षा अधिकारी राम मिलन यादव ने कार्यक्रम की रुपरेखा को स्पष्ट करते हुए कहा कि परिषदीय विद्यालयों की व्यवस्था एवं शैक्षिक स्तर के उन्नयन हेतु कायाकल्प के 19 बिन्दुओं के संतृप्तिकरण के लिए मिशन प्रेरणा, निपुण भारत एवं दीक्षा जैसे कई कार्यक्रम बेसिक शिक्षा विभाग द्वारा चलाये जा रहे हैं। जिसमें कायाकल्प का कार्य ग्राम प्रधानों के सहयोग से संचालित किया जा रहा है। इस बात पर विशेष बल दिया कि प्रधानाध्यापक अपने ग्राम प्रधान से समन्वय स्थापित करते हुए कायाकल्प के अंतर्गत विद्यालय के अवशेष कार्यों को अति शीघ्र पूरा कराएं। इस मौके पर प्राथमिक शिक्षक संघ के ब्लॉक अध्यक्ष विनोद अवस्थी, मधुकर सिंह, एस आर जी राजवंत चौधरी, पूर्व एआरपी शिव बालक, मनीष सिंह, संजय कनौजिया, जयकरन समेत विकास खण्ड के ग्राम प्रधान व सभी परिषदीय विद्यालयों के प्रधानाध्यापक व प्रभारी प्रधानाध्यापक उपस्थित रहे।

खैराबाद सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र का एक दिवसीय स्वास्थ्य शिविर संपन्न

● सरकार की मंशा है कि प्रत्येक नागरिक का अच्छा इलाज हो:-डॉक्टर विजय कुमार सिंह

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर स्थानीय जवाहरपुर शुगर मिल में मुख्य चिकित्सा अधिकारी सीतापुर के आदेशानुपालन के क्रम में सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र खैराबाद के द्वारा स्वास्थ्य परीक्षण संबंधी एक भव्य शिविर का आयोजन किया गया है जिसमें आर वी एस के टीम के द्वारा मरीजों का परीक्षण किया गया और उन्हें उचित परामर्श के अलावा दवाइयां भी दी गई। आर वी एस के टीम में डॉक्टर शिवानी टंडन, डॉक्टर विजय कुमार सिंह तथा जया तिवारी ने मरीजों की कायदे से जांच की और उचित परामर्श भी दिया गया। फैमिली काउंसलर श्रीमती फातमा के द्वारा एच आई वी, एड्स, और यौन सम्बन्धी बीमारियों के बारे में उचित जानकारी दी गई। स्वास्थ्य पर्यवेक्षण गीता सिंह व मीना कुमारी, के द्वारा गर्भवती महिलाओं की प्रसव पूर्व की जांचें की गई, फैमिली काउंसलर गीता सिंह द्वारा परिवार नियोजन प्रदर्शनी का प्रचार प्रसार भी किया गया जबकि एल टी अमित कुमार के द्वारा टी बी, हेपेटाइटिस बी और सी तथा एच आई वी, मधुमेह की उचित जांचें की गई जिसमें जिला अस्पताल की टीम के द्वारा भी सहयोग किया गया जिसमें उदय प्रताप सिंह, नवीन चंद्र दीक्षित,और रजनीश कुमार वर्मा एवं संजीव कुमार आदि उपस्थित रहे। इस अवसर डॉक्टर विजय कार ने कहा कि सरकार की मंशा है कि प्रत्येक नागरिक को उचित चिकित्सा सुविधा प्रदान की जाए और उसका अच्छे से अच्छा इलाज हो सके जबकि डॉक्टर शिवानी टंडन ने कहा कि अक्सर महिलाएं अपनी बीमारियों को छिपा लेती हैं जिनसे उन्हें बाद में भारी मुश्किलों का सामना करना पड़ता है इस लिए चाहिए कि आप सभी जागरूक रहिए और समय रहते अच्छा और उचित इलाज करवाइए।इस अवसर पर कुल 93 रोगियों की जांच की गई जिसमें टी बी, हेपेटाइटिस बी , एच आई वी,शुगर तथा ए एन सी के 93 मरीज़ देखे गए।

जर्नलिस्ट प्रोटेक्शन एसोसिएशन द्वारा वरिष्ठ पत्रकार स्व. विधि सिंह को श्रृद्धांजलि दी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लखनऊ। राजधानी लखनऊ के जर्नलिस्ट प्रोटेक्शन एसोसिएशन (जेपीए) की मासिक बैठक दिनांक 22 फरवरी 2026 दिन रविवार को चिनहट क्षेत्र के शिवपुरी कॉलोनी स्थित प्रधान कार्यालय पर संपन्न हुई। इस अवसर पर एसोसिएशन के पदाधिकारियों और सदस्यों वरिष्ठ पत्रकार स्व. विधि सिंह को श्रृद्धांजलि दी गई। मासिक बैठक में समीक्षा के दौरान जेपीए अध्यक्ष विवेक सिंह ने बताया कि पत्रकारों के हित में जेपीए सतत कार्यरत है। प्रदेश में अगर किसी भी पत्रकार को कोई समस्या है तो जेपीए के पदाधिकारी उसका स्वतः संज्ञान लेकर उनकी हर संभव सहायता करने का प्रयास किया जाता है। इस अवसर पर कोषाध्यक्ष नरसिंह नारायण पांडे ने बताया कि बैठक में वरिष्ठ पत्रकार स्व. विधि सिंह को श्रृद्धांजलि दी गई और उनके द्वारा पत्रकारिता के क्षेत्र में किए गए कार्यों पर प्रकाश डाला गया। बैठक में संरक्षक सदस्य विवेक विश्व पाण्डेय, उपाध्यक्ष रवि जायसवाल, कोषाध्यक्ष नरसिंह नारायण पांडे, वरिष्ठ पत्रकार दीपक सिंह एवं धानिश श्रीवास्तव, जिला अध्यक्ष सनी शाह, सह मीडिया प्रभारी सौरभ निगम, प्रचार मंत्री सैयद इकबाल, रोशनी सोनकर, पूर्णिमा सोनकर आदि पदाधिकारी और सदस्य मौजूद रहें, जिसमें आगामी होली पर होने वाले कार्यक्रम योजना पर भी विस्तार पूर्वक चर्चा की गई।

सुल्तानपुर में 'यादव जी की लव स्टोरी' फिल्म का विरोध

● यादव समाज ने राष्ट्रपति को संबोधित मांग पत्र सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुल्तानपुर में 'यादव जी की लव स्टोरी' फिल्म के विरोध में यादव समाज ने प्रदर्शन किया। सोमवार को कलेक्ट्रेट पर इकट्ठा होकर समाज के लोगों ने राष्ट्रपति को संबोधित एक मांगपत्र सिटी मजिस्ट्रेट को सौंपा। समाज ने प्रस्तावित फिल्म 'यादव जी की लव स्टोरी' पर गंभीर आपत्ति जताई है। उनका मानना है कि फिल्म में ऐसे दृश्य या संवाद हो सकते हैं जो सामाजिक और सांस्कृतिक भावनाओं को ठेस पहुँचा सकते हैं, जिससे समाज में वैमनस्य या अशांति फैलने की आशंका है। समाज का कहना है कि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता महत्वपूर्ण है, लेकिन यह भारतीय कानूनों और सामाजिक मर्यादाओं के दायरे में होनी चाहिए। उन्होंने संबंधित प्राधिकरणों से फिल्म की सामग्री की निष्पक्ष और विस्तृत समीक्षा कराने की मांग की है। यदि कोई आपत्तिजनक अंश पाया जाता है, तो उसके प्रसारण या प्रदर्शन पर रोक लगाने की अपील की गई है। इस संबंध में सुरेश कुमार यादव (भजन प्रधान) ने मीडिया को बताया कि मनोरंजन के नाम पर जातिगत टिप्पणियाँ और फिल्मों के ऐसे नाम समाज में वैमनस्य बढ़ाते हैं। उन्होंने 'घूसखोर पंडित' और 'यादव जी की लव स्टोरी' जैसे शीर्षकों पर कड़ी आपत्ति व्यक्त की। प्रदर्शनकारियों ने फिल्म के नाम और उसकी सामग्री पर सवाल उठाए हैं। यादव ने चेतावनी दी कि यदि फिल्म में समाज की भावनाओं को आहत करने वाला कोई भी अंश पाया जाता है, तो वे सुल्तानपुर में फिल्म का प्रदर्शन नहीं होने देंगे। सुरेश यादव ने सेंसर बोर्ड की कार्यप्रणाली पर भी सवाल उठाए। उन्होंने आरोप लगाया कि ऐसी फिल्में बोर्ड की मिलीभगत के बिना पास नहीं हो सकतीं। उन्होंने यह भी कहा कि यदि उनकी माँगें नहीं मानी गईं और आपत्तिजनक अंश नहीं हटाए गए, तो यादव समाज सड़क जाम, पुतला दहन और सिनेमाघरों के विरोध जैसे कदम उठाने को मजबूर होगा। यादव ने जानकारी दी कि फिल्म के निर्माता और निर्देशक संदीप तोमर तथा अंकित बढ़ाना के खिलाफ अन्य स्थानों पर भी मुकदमे दर्ज किए जा रहे हैं। उन्होंने सुल्तानपुर में भी इसी तरह की कानूनी कार्रवाई करने की बात कही।

चंद्रभानु में एल्युमिनाई मीट में ताजा हुई यादें

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सीतापुर 22 फरवरी चन्द्र भानु गुप्त कृषि महाविद्यालय में एल्युमिनाई मीट का आयोजन किया गया। इस अवसर पर 32 वर्ष पुराने दोस्त गेट- टूगेदर के माध्यम से मिले और महाविद्यालय के दिनों की यादों को ताजा किया। कार्यक्रम की शुरुआत महाविद्यालय के अध्यक्ष डॉ फिदा हुसैन अंसारी एवं प्रबंधक डॉ टीपी सिंह ने सरस्वती जी की प्रतिमा पर दीप प्रज्वलित कर प्रारंभ किया। महाविद्यालय के प्रबंधतंत्र के सदस्यों को पौधा देखकर स्वागत किया गया तथा पूर्व छात्र- छात्राओं ने अपने अनुभव एवं विचार साझा किए,पुरातन सम्मेलन में रंगारंग कार्यक्रमों का आनंद लिया और साथ में भोजन किया। महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ योगेंद्र कुमार सिंह ने सभी पुरातन छात्रों का स्वागत किया। मुख्य अतिथि डॉ फिदा हुसैन अंसारी ने पुराने दोस्तों से मिलने की खुशी को अवर्णनीय बताया और बताया कि श्रद्धेय भगवती सिंह जी द्वारा स्थापित किया गया महाविद्यालय पूरे भारत में जाना जाता है इसे अच्छा करने में सभी सहयोग करें । महाविद्यालय के प्रबंधक डॉ टी पी सिंह ने कहा कि महाविद्यालय के पुरातन छात्र के महाविद्यालय के गौरव को ऊंचा करने में मदद करे महाविद्यालय के विकास में समर्पण भाव से योगदान करें । रविवार को महाविद्यालय में ये अद्भुत नजारा देखने को मिला।जहां एल्युमनाई मीट में गेट-टू-गेदर होकर सेलिब्रेशन किया गया। महाविद्यालय पुराने दोस्तों ने खूब ठहाके लगाए तथा एक-दूसरे को गले लगाया। महाविद्यालय के पुरातन छात्र आर सी गुप्ता ने बताया की इस महाविद्यालय का मैं छात्र रहा आज हमने अपनी कंपनी बनाई है मेरी कंपनी में बायोटेक्नोलॉजी,बायो पेस्टीसाइड, स्मार्ट बायो उर्वरक के उत्पाद बनाये जाते हैं और किसानों को कम दरों में उपलब्ध करायें जाते हैं । जिसमें हम महाविद्यालय के छात्र-छात्राओं को रोजगार दे रहे हैं। आस्ट्रेलिया में शिक्षक पद पर कार्यरत महाविद्यालय के पुरातन छात्र डॉ तुलसीराम भुसाल ने कहा की महाविद्यालय का शिक्षण कार्य बहुत बेहतर है इसका लाभ लेना चाहिए। महाविद्यालय के मिडिया प्रभारी डॉ सत्येंद्र कुमार सिंह ने बताया कि इस महाविद्यालय का मैं पुरातन छात्र हूं आज इसी विधालय में शिक्षक हूं विधालय में 32 वर्ष से छात्र और शिक्षक के रूप में जुड़ा हूं। लगभग 7500 कृषि स्नातक एवं 900 परास्नातक कृषि छात्र- छात्राएं इस महाविद्यालय से शिक्षा ग्रहण कर चुके हैं जो पुरे भारत तथा विदेशों में सेवाएं दे रहे हैं। महाविद्यालय के हजारों छात्र-छात्राएं शिक्षक राजनीति वैज्ञानिक और उद्यमी के रूप आगे बढ़ रहे हैं। इस अवसर पर महाविद्यालय के प्रबंध तंत्र के सदस्य अशोक सिंह व डॉ बैजनाथ रावत,जितेंद्र निगम प्रशासनिक अधिकारी शिवमंगल चौरसिया, समन्वयक अधिकारी अजय भदोरिया, डॉ हृदय नारायण तिवारी, डॉ सुधीर कुमार रघुवंशी सहित सभी शिक्षक कर्मचारी एवं महाविद्यालय के 150 से अधिक पुरातन छात्रो ने प्रतिभाग किया।

नगर पंचायत क्षेत्र में कोई भी पात्र आवास पाने से वंचित नहीं रहेगा: नगर पंचायत अध्यक्ष

● शीघ्र जाम की समस्या से लंभुआ वासियों को मिलेगा निजात

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

लंभुआ। सुलतानपुर लंभुआ नगर पंचायत कार्यालय पर पत्रकार वार्ता करते हुए नगर पंचायत अध्यक्ष अवनीश कुमार उर्फ अंगद सिंह ने कहा कि नगर पंचायत क्षेत्र में कोई भी पात्र आवास पाने से वंचित न हो, ऐसा मेरा पूरा प्रयास है। कुछ लोग चाहते हैं कि जिनको आवास मिले हुए हैं और वह घर भी बनवाना शुरू कर दिए हैं। उनका आवास निरस्त हो जाए और उन्हें पैसे वापस करने पड़ जाएं। हम पूरे नगर पंचायत क्षेत्र के विभिन्न वार्डों में भ्रमण कर जानकारी हासिल कर रहे हैं, तहसील प्रशासन ने लेखपालों को लगाया हुआ है, लेखपाल रिपोर्ट तैयार कर रहे हैं। हमारा पूरा प्रयास रहेगा की नगर पंचायत क्षेत्र में कोई भी पात्र आवास पाने से वंचित न रह जाए। कहा कि अगर कोई सभासद या कोई कर्मचारी या कोई व्यक्ति आवास के नाम पर पैसा वसूलता हुआ पाया गया, तो उसके खिलाफ सख्त कार्रवाई कराई जाएगी। उन्होंने कहा कि जाम की समस्या से शीघ्र नगर पंचायत वासियों को मुक्ति मिलेगी, उसके लिए जमीन चिन्हित की जा रही है, वहां पर सब्जी मंडी हो जाएगी। टैक्सी स्टैंड के लिए भी प्रयास किया जा रहा है। उसके बाद जाम की स्थिति समाप्त हो जाएगी। नगर पंचायत अध्यक्ष श्री सिंह ने कहा कि नगर पंचायत क्षेत्र में जो भी सूखे पेड़ हैं और सड़क के किनारे हैं, जिनके गिरने से कभी भी बड़ी दुर्घटना हो सकती है, उसकी सूचना हमें उपलब्ध करवाएं। हम विभाग को पत्र लिखकर उसे शीघ्रता के साथ कटवाएंगे। उन्होंने कहा कि नाले का निर्माण तीव्र गति से हो रहा है, आने वाली बरसात में पानी निकासी की समस्या समाप्त हो जाएगी। क्योंकि लंभुआ में जल निकासी की समस्या सबसे बड़ी समस्या थी। नगर पंचायत अध्यक्ष ने पत्रकारों के लिए प्रेस क्लब के निर्माण के लिए शीघ्र जमीन उपलब्ध कराने का आश्वाशन दिया।

सरकारी स्कूल में बच्चों को कैद करने का मामला ,जांच करने पहुंचे बीएसए

● शिक्षा मित्र बोली-sc समुदाय से आती हूं इसलिए बनाया जा रहा निशान

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

सुल्तानपुर- लंभुआ कोतवाली वैनी कंपोजिट विद्यालय में बच्चों को बंद करने के मामले ने तूल पकड़ लिया है। बीएसए उपेंद्र गुप्ता ने सोमवार को लंभुआ क्षेत्र के वैनी (बेनी) कंपोजिट विद्यालय में हुए विवाद और वायरल वीडियो के मामले में निरिक्षण किया। इस मामले में रामा राजेश्वरी का कहना है कि 13 फ़रवरी को विद्यालय के कुछ शिक्षकों (अमित शांडिल्य, गुड़िया गुप्ता और गरिमा पांडेय) ने उनके कक्ष में घुसकर जबरन वीडियो बनाया और उनके साथ अभद्रता की। उन्होंने आरोप लगाया कि वे श्रेष्ट समुदाय से आती हैं, इसलिए उन्हें निशाना बनाया जा रहा है। उनके अनुसार, शिक्षकों ने उन्हें धमकाते हुए कहा, 'तुम्हारी 10 हजार की नौकरी चट कर जाएंगे।' उन्होंने इस मामले की लिखित शिकायत BEO (खंड शिक्षा अधिकारी) और BS (जिला बेसिक शिक्षा अधिकारी) से की थी। उनका आरोप है कि अधिकारियों ने उनकी मदद करने के बजाय उनके खिलाफ ही कार्रवाई की बात कही और उन पर 'राजनीति करने' का आरोप लगाया। बीएसए के अनुसार, प्राथमिक जांच में स्कूल स्टाफ, ग्राम प्रधान और अभिभावकों (SMC) के बीच आपसी तालमेल की कमी और निजी विवाद की बात सामने आई है, जिसका सीधा असर बच्चों की शिक्षा पर पड़ रहा है। उन्होंने स्पष्ट कहा है कि जांच रिपोर्ट आने के बाद यदि प्रधानाध्यापिका या अन्य स्टाफ की लापरवाही सामने आती है, तो उनके खिलाफ कठोर विभागीय कार्रवाई की जाएगी।बीएसए ने मामले की गंभीरता को देखते हुए खंड शिक्षा अधिकारी (BEO) को तत्काल विस्तृत जांच सौंप दी है। बता दें कि 13 फरवरी को एक वीडियो सामने आया था जिसमें प्रधानाध्यापिका प्रतिभा त्रिपाठी बच्चों को गेट के अंदर बंद करके बाहर जाती दिख रही हैं। वीडियो में बच्चे उनसे गेट खोलने का अनुरोध करते भी सुनाई दे रहे हैं। एक अन्य वीडियो में एक बाहरी व्यक्ति बच्चों की पिटाई करता नजर आ रहा है। हैरानी की बात यह है कि शिक्षामित्र उसे रोकने का प्रयास कर रही थी, लेकिन विद्यालय का अन्य स्टॉफ इस घटना को रोकने के लिए कोई कदम नहीं उठा रहा है।

शिक्षकों ने काली पट्टी बांध कर टेट अनिवार्यता का जताया विरोध

रतनपुर/महराजगंज। नौतनवां ब्लाक क्षेत्र के ग्राम पंचायत पुरैनिहा के उच्च प्राथमिक विद्यालय में सोमवार को टीचर्स फेडरेशन ऑफ इंडिया के निर्देशानुसार ब्लाक कार्य समिति एवं ब्लाक संघर्ष समिति उत्तर प्रदेश प्राथमिक शिक्षक संघ के ब्लाक अध्यक्ष राघवेन्द्र नाथ पाण्डेय के नेतृत्व में टेट अनिवार्यता के विरोध में शिक्षकों ने बैठककर जोरदार विरोध जताया है। क्षेत्र के उच्च प्राथमिक विद्यालय पुरैनिहा की में बैठक में उत्तर प्रदेश शासन के द्वारा शिक्षकों को टेट परीक्षा अनिवार्य किए जाने को लेकर शिक्षण कार्य में काली पट्टी बांध कर शिक्षकों द्वारा विरोध किया गया है। बैठक में चार मुख्य बिन्दुओं पर चर्चा करते हुए कहा कि 22 फरवरी को ट्विटर अभियान एवं 23 फरवरी से 25 फरवरी तक शिक्षक दाहिने हाथ में काली पट्टी बांध कर टेट अनिवार्यता का विरोध तथा 26 फरवरी को जिलास्तरीय धरना प्रदर्शन तथा मार्च में तीन सप्ताह दिल्ली धरना प्रदर्शन किया जायेगा। बैठक में शिक्षक चन्द्रभान प्रसाद, उमेश चन्द्र यादव, सूर्यभान उपाध्याय, शत्रुघ्न, पब्बर यादव, कृष्ण पाल सिंह चौधरी सहित आदि लोग मौजूद रहे।

संक्षिप्त खबरें

समाहरणालय सभा कक्ष में जिला पदाधिकारी के निर्देशानुसार जनता दरबार का आयोजन

गोपालगंज (बिहार)– जिला पदाधिकारी पवन कुमार सिन्हा के निर्देशानुसार जनता दरबार का आयोजन अपर समाहर्ता राजेश्वरी पाण्डेय के द्वारा किया गया। जनता दरबार में जिले के विभिन्न प्रखंडों से आए नागरिकों ने अपनी समस्याएं जिला पदाधिकारी के समक्ष रखीं। जनता दरबार के दौरान चंद्रभान गिरी , प्रखंड कुचायकोट, ग्राम बलवंत सागर द्वारा भूमि विवाद से संबंधित मामला प्रस्तुत किया गया। वहीं सुनील भगत, प्रखंड फुलवरिया, ग्राम कमलाकांत करारिया द्वारा भूमि संबंधी समस्या से जिला प्रशासन को अवगत कराया गया। इसके अतिरिक्त मालती देवी, प्रखंड गोपालगंज द्वारा भूमि विवाद से संबंधित आवेदन दिया गया तथा राजिंद्र भगत, प्रखंड गोपालगंज, ग्राम यादोपुर द्वारा भूमि विवाद का मामला जिला पदाधिकारी के समक्ष रखा गया। अपर समाहर्ता राजेश्वरी पाण्डेय ने सभी फरियादियों की समस्याओं को गंभीरता से सुना एवं संबंधित विभागीय पदाधिकारियों को मामलों की जांच कर नियमानुसार शीघ्र निष्पादन करने का निर्देश दिया। उन्होंने कहा कि जनता दरबार का मुख्य उद्देश्य आम जनता की समस्याओं का त्वरित एवं पारदर्शी समाधान सुनिश्चित करना है। इस अवसर पर वरीय उप समाहर्ता दिलीप कुमार वरीय उप समाहर्ता अजय कुमार भी उपस्थित रहे। दोनों पदाधिकारियों ने जनता दरबार के दौरान मामलों की सुनवाई में सहयोग किया।

एस आर एम टीम द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य सुरियावा सहित अन्य स्वास्थ्य केंद्र का किया गया निरीक्षण

सुरियावा सोमवार 23 फरवरी 2026 को स्वास्थ्य विभाग की एस आ यम टीम द्वारा सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र सुरियावां प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र हरिहरपुर . करियाव , महजुदा व 14 आयुष्मान आरोग्य मंदिर का टीम के डॉक्टर अजय सिंह डॉक्टर विक्रांत सिंह द्वारा चिकित्सा एवं परिवार कल्याण के अंतर्गत अंतर्गत संचालित कार्यक्रमों उपलब्ध सुविधाओं संसाधनों और उपचार व्यवस्था की वास्तविक स्थिति का आकलन करना साफ सफाई दावों की उपलब्धता चिकित्सकों और पैरामेडिकल स्टाफ की उपस्थिति उपकरणों तथा मरीजों को मिलने वाले सुविधाओं की बारीकी से जांच की प्रसुति वार्ड इमरजेंसी पैथोलॉजी सेवाएं लैब और टीकाकरण कक्षा पर विशेष ध्यान दिया जांच के दौरान मरीज और तीर मदारों से भी फीडबैक लिया ताकि स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता का निष्पक्ष मूल्यांकन किया जा सके टीम रिकॉर्ड रजिस्टर दवा स्टॉक रजिस्टर वह अन्य आवश्यक दस्तावेजों का भी पड़ताल किया टीम का यह दौरा स्वास्थ्य सेवाओं को बेहतर एवं जवाब दे बनाने की दिशा में एक आम कदम माना जा रहा है इससे सुविधाओं में सकारात्मक सुधार देखने को मिलेगा इस मौके पर सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र अधीक्षक सुरियावां अभिषेक नाग एवं समस्त स्टाफ मौजूद रहा सिया।

स्वास्थ्य गुणवत्ता, स्वच्छता व्यवस्था तथा उपलब्ध सुविधाओं की सदस्या ने की समीक्षा

देवरिया। राज्य महिला आयोग उत्तर प्रदेश की सदस्य गीता विश्वकर्मा का आज जनपद आगमन हुआ। इस दौरान उन्होंने प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्र मझगावा एवं सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र भलुअनी का निरीक्षण किया व स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता, स्वच्छता व्यवस्था तथा मरीजों को उपलब्ध सुविधाओं की समीक्षा की और जनहित में आवश्यक दिशा-निर्देश दिए। इसके पश्चात प्राथमिक विद्यालय चकरा भार्गव, भलुअनी में आयोजित जागरूकता कार्यक्रम में छात्र-छात्राओं एवं अभिभावकों को संबोधित किया। वक्ताओं ने शिक्षा, स्वास्थ्य और महिला सशक्तिकरण के महत्व पर जोर देते हुए बालिकाओं की नियमित शिक्षा और पोषण पर विशेष ध्यान देने का आह्वान किया। कार्यक्रम के दौरान बच्चों को फल एवं जूस वितरित कर उनके बेहतर स्वास्थ्य के प्रति प्रेरित किया गया। इस अवसर पर जिला प्रोबेशन अधिकारी अनिल सोनकर, मीनू जायसवाल, प्रधानाचार्य कृष्ण कुमार सिंह, अध्यक्ष नगर पालिका गौरा बरहज स्वेता जायसवाल, ओम प्रकाश कुशवाहा, दुर्गेश मद्देशिया, अभिषेक पाण्डेय, द्वारिका प्रसाद मद्देशिया जिलाध्यक्ष मद्देशिया समाज, मनोज मद्देशिया, विनोद मद्देशिया, मनोज तिवारी, संजीव गौतम, अरुण मिश्रा,दीपिका तिवारी सहित अनेक गणमान्य नागरिक, शिक्षकगण व क्षेत्रीय प्रतिनिधि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में जागरूकता बढ़ाना और जनहितकारी योजनाओं को जमीनी स्तर तक पहुंचाना रहा।

श्रीभूमि जिले के मॉडल विलेज कृष्णनगर गाँव जल जीवन मिशन से वंचित! पीने के पानी की गंभीर किल्लत

●जिले के विभागीय अधिकारी मौन साधे हुए।

●प्रधानमंत्री और मंत्री जयंत मल बरूआ का ध्यान आकर्षित।

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

असम के श्रीभूमि जिले के दुल्लभछड़ा के निकट स्थित मॉडल विलेज कृष्णनगर गाँव में इन दिनों पेयजल संकट गहराता जा रहा है। उल्लेखनीय है कि देश के प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में शुरू की गई केंद्र सरकार की महत्वाकांक्षी योजना जल जीवन मिशन का उद्देश्य वर्ष 2024 तक हर ग्रामीण परिवार को नल के माध्यम से शुद्ध पेयजल उपलब्ध कराना था। राज्य सरकार द्वारा जनस्वास्थ्य अभियांत्रिकी विभाग (PHE) के माध्यम से इस योजना को विभिन्न क्षेत्रों में लागू किया जा रहा है। किन्तु ग्रामीणों का आरोप है कि मॉडल विलेज कृष्णनगर गाँव आज भी इस योजना के लाभ से वंचित है। स्थानीय निवासियों के अनुसार, वर्षों से उपयोग में आने वाले तालाब और खाल, जो पेयजल के मुख्य स्रोत थे, सूखे मौसम की शुरुआत के साथ लगभग पूरी तरह सूख चुके हैं। परिणामस्वरूप ग्रामीणों को रोजमर्रा की जरूरतों के लिए दूर-दराज क्षेत्रों से पानी लाना पड़ रहा है, जिससे उन्हें भारी कठिनाइयों का सामना करना पड़ रहा है। ग्रामीणों का कहना है कि योजना के तहत प्रारंभिक सर्वेक्षण तो किया गया था, लेकिन अब तक कोई ठोस कार्यान्वयन नहीं हुआ। उन्होंने यह भी आरोप लगाया कि विभागीय अधिकारी स्थिति से अवगत होने के बावजूद मौन बने हुए हैं। इससे क्षेत्र में असंतोष और रोष बढ़ता जा रहा है। सरकार की 'सबका साथ, सबका विकास' नीति का हवाला देते हुए ग्रामीणों ने प्रश्न उठाया है कि यदि प्रत्येक घर तक स्वच्छ पेयजल पहुंचाने का संकल्प लिया गया है, तो मॉडल विलेज कृष्णनगर को इस मूलभूत सुविधा से क्यों वंचित रखा गया है? समस्या के त्वरित समाधान की मांग करते हुए ग्रामीणों ने लोकप्रिय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी तथा असम के मंत्री जयंता मल्ला बरुआ का ध्यान आकर्षित किया है। उनका आग्रह है कि जल जीवन मिशन के अंतर्गत शीघ्र स्थायी पेयजल व्यवस्था सुनिश्चित की जाए, ताकि गाँववासियों को राहत मिल सके।

दिल्ली में झगड़े का बदला लेने के लिए युवक की चाकू घोंपकर हत्या, वारदात के बाद सभी आरोपी मौके से हुए फरार

बाहरी दिल्ली। रोहिणी सेक्टर-24 में झगड़े का बदला लेने के लिए रविवार रात आरोपित ने दोस्तों के साथ मिलकर एक युवक पर चाकू से हमला कर दिया। जिससे उसकी घटनास्थल पर ही मौत हो गई। सूचना पर पहुंची विजय विहार थाना पुलिस ने शव कब्जे में लेकर जांच शुरू कर दी है। मृतक की शिनाख्त शाहबाद डेरी के डी ब्लॉक निवासी राजा उर्फ मंगल के रूप में हुई है। मृतक का तीन दिन पहले एक आरोपित से झगड़ा हुआ था। इस दौरान मृतक और उसके दोस्तों ने एक आरोपित की पिटाई कर दी थी और उसकी स्कूटी में तोड़ दी थी। रोहिणी जिला के अतिरिक्त पुलिस आयुक्त राजीव रंजन ने बताया कि रविवार रात करीब 12:25 बजे पुलिस को सेक्टर-24 रोहिणी जेजे कॉलोनी में एक युवक के पेट में चाकू मारे जाने की जानकारी मिली। पुलिस के पहुंचने से पहले घायल युवक के परिवार वाले पास के अस्पताल में लेकर चले गए थे। अस्पताल पहुंचने पर पुलिस को पता चला कि डॉक्टरों ने घायल शाहबाद डेरी निवासी राजा उर्फ मंगल सिंह को मृत घोषित कर दिया है। पुलिस ने क्राइम और फोरेंसिक टीम को मौके पर बुलाया। टीम ने वहां से साक्ष्य हासिल किए। जांच में पुलिस को पता चला कि मृतक आपराधिक प्रवृति का व्यक्ति था। उस पर पांच आपराधिक मामले दर्ज थे।

एचटी लाइन की चपेट में आकर बालक झुलसा

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

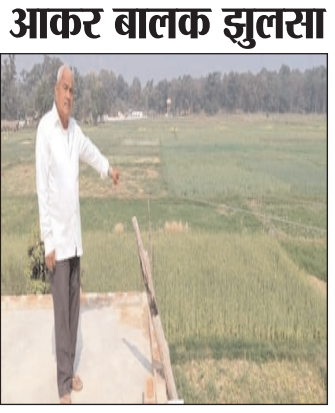

बलरामपुर। गैसड़ी। मुतेहरा गांव में शनिवार को छत पर खेलते समय बालक सुमेंदर (08) हाईटेंशन तार की चपेट में आकर बुरी तरह झुलस गया। पिता पिंगल थारू उसे गैसड़ी सीएचसी लेकर पहुंचे, वहां से उसे जिला अस्पताल रेफर कर दिया गया। हालत गंभीर देखते हुए डॉक्टरों ने सुमेंदर को केजीएमयू लखनऊ रेफर कर दिया। हादसे के बाद ग्रामीणों में आक्रोश है। ग्रामीणों का आरोप है कि विरोध के बावजूद विभाग ने गांव में आबादी के ऊपर से हाईटेंशन लाइन खींच दी। इसी के चलते हादसा हुआ है। हादसे के बाद गांव में अफरातफरी मच गई। इस घटना को लेकर ग्रामीणों में आक्रोश है। ग्राम प्रधान विश्राम चौधरी ने बताया कि थारू गांवों में आज भी विद्युतीकरण की समस्या है।

ग्राम मुतेहरा के तीन मजरे हैं। मुतेहरा, अकलघरवा और सोनगढ़ा मजरों में अभी तक विद्युतीकरण नहीं हुआ था। मुतेहरा मजरे को मुख्यमंत्री ने गोद भी लिया है। इन मजरों में 98 फीसदी आबादी थारू जनजाति की है।मुख्यमंत्री के निर्देश पर मुतेहरा मजरे में विद्युतीकरण का कार्य शुरू कराया गया। आबादी के ऊपर से हाईटेंशन तार न ले जाने के लिए पांच फरवरी को प्रार्थनापत्र डीएम को दिया गया था, लेकिन विभाग ने 11 फरवरी को आबादी के बीच से नंगे हाईटेंशन तारों को खींच दिया। इसी के चलते हादसा हुआ है।

ग्रामीण कालूराम, तेज बहादुर चौधरी, सर्वेश कुमार, देवनाथ चौधरी, रामू, अंश चौधरी व रामकरन आदि ने आक्रोश जताते हुए मांग किया कि जांच कराकर दोषियों पर कार्रवाई की जाए। थानाध्यक्ष दुर्विजय का कहना है कि हादसे को लेकर शिकायती पत्र नहीं मिला है। मामले की जांच की जा रही है। ग्रामीणों ने की थी शिकायत, होगी कार्रवाईगैसड़ी के ग्राम मुतेहरा में घरों के ऊपर से हाईटेंशन तार ले जाने की शिकायत ग्रामीणों ने की है। इसकी जांच कराई जा रही है। रिपोर्ट के आधार पर कार्रवाई की जाएगी। -राजेश कुमार, अधिशासी अभियंता विद्युत वितरण खंड तुलसीपुर।

थाना सिंहपुर पुलिस द्वारा मंदिर से चोरी करने वाले दो आरोपी गिरफ्तार

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

शहडोल। दिनांक 17.02.2026 को फरियादी प्रकाश सिंह तोमर पिता नाहर सिंह तोमर उम्र 40 वर्ष निवासी ग्राम भानपुर, थाना सिंहपुर, जिला शहडोल द्वारा थाना उपस्थित आकर रिपोर्ट दर्ज कराई गई कि दिनांक 16.02.2026 की दरमियानी रात्रि में अज्ञात चोर द्वारा ग्राम भानपुर स्थित महामाया मंदिर एवं दुर्गा मंदिर से सोने-चांदी के जेवरात चोरी कर लिए गए हैं। उक्त रिपोर्ट पर थाना सिंहपुर में अज्ञात आरोपी के विरुद्ध अपराध धारा) बी.एन.एस. के तहत प्रकरण पंजीबद्ध कर विवेचना में लिया गया। विवेचना के दौरान पुलिस टीम द्वारा सतत प्रयास एवं मुखबिर सूचना के आधार पर संदेही आरोपियों की तलाश की गई। जिसमें निम्नलिखित आरोपियों को हिरासत में लेकर पूछताछ की गई–

1. पुपेन्द्र उर्फ अमन पिता विष्णु प्रसाद विश्वकर्मा, उम्र 25 वर्ष, निवासी खैरहा
2. मोहम्मद अहेद रजा पिता सहाबुद्दीन रजा उर्फ सिंहपुरिया, उम्र 19 वर्ष, निवासी खैरहा

पूछताछ के दौरान आरोपियों द्वारा अपराध स्वीकार किया गया। आरोपियों के कब्जे से निम्न मशरूका बरामद किया गया– बरामद मशरूकाः कुल कीमत लगभग - 96,000/- रुपये बरामद मशरूका विधिवत जप्त कर उक्त आरोपियों को दिनांक 21.02.2026 को गिरफ्तार कर माननीय न्यायालय प्रस्तुत किया गया है। सराहनीय भूमिका- उक्त कार्यवाही थाना प्रभारी सिंहपुर निरी.एम.एल.संहगडाले के नेतृत्व में, सउनि लोलर प्रसाद मिश्रा, सउनि शुभवंत चतुर्वेदी प्र.आर सत्यनारायण पाण्डेय, प्र.आर. देवेन्द्र पाण्डेय, प्र.आर. महेन्द्र सिंह, आर. हीरालाल महरा, आर. विकास की महत्वपूर्ण भूमिका रही।

दिल्ली में आपसी रंजिश में एक व्यक्ति के जबड़े में मारी गोली, 20 दिन पहले पैरोल पर बाहर आया था बदमाश

दिल्ली। शाहबाद डेरी इलाके में रविवार की रात एक बदमाश ने अपने एक अन्य साथी के साथ मिलकर एक शख्स के जबड़े में गोली मार दी। वारदात को अंजाम देने के बाद आरोपित मौके से फरार हो गए। सूत्रों के मुताबिक जेल से 20 दिन पहले पैरोल पर बाहर आए एक बदमाश ने वारदात को अंजाम दिया है। घायल को आनन-फानन में पास के ही एक अस्पताल में भर्ती कराया गया। जहां घायल का इलाज जारी है। पुलिस ने संबंधित धाराओं में मामला दर्ज कर आरोपित का पता लगा रही है। शुरुआती जांच में पता चला कि पीड़ित को आपसी रंजिश में गोली मारी गई है। पीड़ित फिलहाल बयान देने की हालत में नहीं है। घायल की पहचान 36 वर्षीय राजेश पासवान के रूप में हुई है, जो बैट्री रिक्शा चलाता है। पहले दो आपराधिक मामलों में शामिल रहा है। बाहरी-उत्तरी जिला पुलिस उपायुक्त हरेश्वर वी स्वामी ने बताया कि पूठखुर्द स्थित महर्षि वाल्मीकि अस्पताल से सूचना मिली कि शाहबाद डेरी में गोली लगने से घायल एक व्यक्ति को भर्ती किया गया है। सूचना मिलने पर पुलिस टीम तुरंत अस्पताल पहुंची, जहां पता चला कि शाहबाद डेरी, एफ ब्लाक निवासी घायल राजेश को हायर सेंटर के लिए रेफर कर दिया गया है।

फूलों की होली उत्सव नरेला में हर्षोल्लास के साथ संपन्न

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

नई दिल्लीः उत्तरी बाहरी दिल्ली के नरेला क्षेत्र में फेडरेशन ऑफ नरेला सब सिटी द्वारा आज भव्य फूलों की होली उत्सव का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र के अनेक गणमान्य नागरिक, समाजसेवी एवं विशिष्ट अतिथि उपस्थित रहे।कार्यक्रम के मुख्य अतिथि मुकेश दहिया कुनबा? धर्मेश रहे। विशिष्ट अतिथियों में राजकरण खत्री विधायक, नरेला विधानसभा, स्वेता कमल खत्री निगम पार्षद, वार्ड नरेला जनता देवी निगम पार्षद, वार्ड बख्तावरपुर तथा चौधरी रणबीर सिंह अध्यक्ष, राष्ट्रीय खत्री खाप विशेष रूप से उपस्थित रहे। इसके अतिरिक्त कारगिल युद्ध के विजेता कई वीर सैनिक भी कार्यक्रम में मौजूद रहे। संस्था की ओर से सभी अतिथियों को अंगवस्त्र, स्मृति-चिन्ह एवं पुष्पगुच्छ भेंट कर सम्मानित किया गया। इस अवसर पर लगभग 30 समाजसेवियों को राष्ट्रीय समाज सेवा अवॉर्ड से सम्मानित किया गया, जो अपनी-अपनी संस्थाओं के माध्यम से विभिन्न क्षेत्रों में उत्कृष्ट सेवाएं प्रदान कर रहे हैं। होली उत्सव में कई स्कूल के बच्चों ने अपने नृत्य का अद्भुत प्रतिभा के माध्यम से आए हुए अतिथियों का मन मोह लिया। मंच का संचालन श्री मनोज बंसल ने किया संस्था के अध्यक्ष जोगेंद्र दहिया ने बताया कि उनकी संस्था पिछले 16 वर्षों से नरेला क्षेत्र में फूलों की होली का आयोजन कर रही है। उन्होंने कहा कि इस आयोजन का मुख्य उद्देश्य होली के माध्यम से जन-जागरूकता फैलाना है। रासायनिक रंगों के उपयोग एवं अत्यधिक जल व्यय से त्वचा रोग एवं अन्य स्वास्थ्य संबंधी समस्याएं उत्पन्न होती हैं। इसलिए संस्था की ओर से आमजन से अपील की गई कि वे रंग-मुक्त एवं पर्यावरण-अनुकूल फूलों की होली मनाएं, जिससे बच्चों, बुजुर्गों एवं महिलाओं को किसी प्रकार की असुविधा न हो। मुख्य अतिथि मुकेश दहिया ने अपने संबोधन में कहा कि समाज में फेडरेशन जैसे संगठनों के प्रयास निरंतर होते रहने चाहिए। ऐसे आयोजन समाज को आगे बढ़ाने में सहायक होते हैं तथा स्वास्थ्य संबंधी समस्याओं से भी बचाव करते हैं। उन्होंने सभी को फूलों की होली खेलने का संदेश दिया।क्षेत्रीय विधायक राजकरण खत्री ने कहा कि संस्था सदैव जनहित के कार्यों में अग्रणी रही है। चाहे सिलाई केंद्र हो, ब्यूटी पार्लर प्रशिक्षण हो या रक्तदान शिवि संस्था समाज को जागरूक करने का सतत प्रयास कर रही है। उन्होंने क्षेत्रवासियों को होली की हार्दिक शुभकामनाएं एवं बधाई दी। निगम पार्षद श्रीमती स्वेता कमल खत्री ने कहा कि यह संस्था हमेशा समाज को एकजुट करने वाले नवाचार करती है। नरेला में फूलों की होली की परंपरा की शुरुआत इसी फेडरेशन द्वारा की गई थी, जो आज एक सकारात्मक संदेश का माध्यम बन चुकी है। उन्होंने संपूर्ण संस्था को होली पर्व की शुभकामनाएं दीं। इस अवसर पर फेडरेशन के पदाधिकारीगण–धनंजय सिंह, नरेंद्र कुमार, रंजीत पांडे, राजकुमार अरोड़ा, नरेश कुमार सैनी, बिजेंद्र अंतिल, संतोष तुषीर, सरोज वशिष्ठ, सुशीला मलिक, मनप्रीत कौर सहित दूर-दराज से आए अनेक गणमान्य अतिथि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का समापन आपसी प्रेम, भाईचारे और पर्यावरण संरक्षण के संदेश के साथ हुआ।

होली पर्व को लेकर शांति समिति की बैठक संपन्न, प्रशासन अलर्ट मोड में

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

गोपालगंज (बिहार)– आगामी होली पर्व को शांतिपूर्ण एवं सौहार्दपूर्ण वातावरण में संपन्न कराने को लेकर समाहरणालय सभा कक्ष में पुलिस अधीक्षक विनय तिवारी की अध्यक्षता में शांति समिति की महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक का मुख्य उद्देश्य जिले में विधि-व्यवस्था बनाए रखने, संभावित संवेदनशील स्थलों की पहचान करने तथा पर्व के दौरान किसी भी प्रकार की अवांछित गतिविधियों पर रोक लगाने हेतु प्रशासनिक तैयारियों की समीक्षा करना था।

बैठक के दौरान होली पर्व से संबंधित विभिन्न बिंदुओं पर विस्तारपूर्वक चर्चा की गई। पुलिस अधीक्षक द्वारा स्पष्ट रूप से निर्देश दिया गया कि जिले के सभी क्षेत्रों में विधि-व्यवस्था को लेकर विशेष सतर्कता बरती जाए। उन्होंने कहा कि होली एक सामाजिक एवं सांस्कृतिक पर्व है जिसे आपसी भाईचारे और सौहार्द के साथ मनाया जाना चाहिए, इसलिए प्रशासन की जिम्मेदारी है कि हर हाल में शांति व्यवस्था बनी रहे। बैठक में यह निर्णय लिया गया कि सभी संवेदनशील स्थलों की पहचान कर वहां विशेष निगरानी रखी जाएगी। पुलिस बल की तैनाती उन क्षेत्रों में प्राथमिकता के आधार पर की जाएगी जहां पूर्व में किसी प्रकार की तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न हुई हो। इसके साथ ही सीमावर्ती क्षेत्रों पर भी विशेष सतर्कता बरतने का निर्देश दिया गया ताकि किसी बाहरी तत्व द्वारा माहौल खराब करने की कोशिश को समय रहते रोका जा सके।

पुलिस अधीक्षक ने यह भी निर्देश दिया कि पर्व के दौरान डीजे के प्रयोग पर पूर्ण रूप से प्रतिबंध सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने कहा कि तेज ध्वनि विस्तारक यंत्रों के उपयोग से सामाजिक तनाव उत्पन्न होने की संभावना रहती है, इसलिए इस पर कड़ाई से नियंत्रण रखा जाएगा। संबंधित अधिकारियों को यह सुनिश्चित करने का निर्देश दिया गया कि किसी भी स्थान पर नियमों का उल्लंघन न हो। बैठक में यह भी चर्चा की गई कि पर्व के दौरान अफवाहों पर विशेष निगरानी रखी जाए। सोशल मीडिया के माध्यम से फैलने वाली भ्रामक सूचनाओं पर त्वरित कार्रवाई करने के लिए प्रशासनिक एवं पुलिस स्तर पर समन्वय स्थापित करने का निर्णय लिया गया। आम जनता से भी अपील की जाएगी कि वे किसी भी प्रकार की अपुष्ट सूचना पर ध्यान न दें और शांति बनाए रखने में प्रशासन का सहयोग करें।

इसके अतिरिक्त, अधिकारियों को निर्देशित किया गया कि सभी थाना क्षेत्रों में फ्लैग मार्च एवं जन-जागरूकता अभियान चलाए जाएं ताकि लोगों में सुरक्षा का विश्वास कायम हो सके। शांति समिति के माध्यम से स्थानीय जनप्रतिनिधियों एवं समाज के प्रतिष्ठित व्यक्तियों से भी सहयोग लेने पर जोर दिया गया। बैठक में अपर समाहर्ता राजेश्वरी पाण्डेय, अपर समाहर्ता (लोक शिकायत निवारण) रोहित कुमार, भू अर्जन पदाधिकारी अनिल कुमार, अनुमंडल पदाधिकारी गोपालगंज अनिल कुमार, वरीय उप समाहर्ता दिलीप कुमार एवं विशेष कार्य पदाधिकारी संदीप कुमार सामान्य शाखा प्रभारी अजय कुमार सहित अन्य संबंधित पदाधिकारी उपस्थित रहे।

39 लाख से चमकेगा पोस्टमार्टम हाउस, एयर कंडिशनर और इन जरूरी उपकरणों की होगी खरीद

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बलरामपुर। अटल स्वशासी चिकित्सा महाविद्यालय के अधीन संयुक्त जिला चिकित्सालय में स्थित पोस्टमार्टम हाउस की बदहाली दूर होने का रास्ता साफ हो गया है। पोस्टमार्टम हाउस को आधुनिक उपकरणों से लैस करने व बदहाल भवन को दुरुस्त करने के लिए 39 लाख 34 हजार 484 रुपये की वित्तीय स्वीकृति मिली है। सब कुछ ठीक रहा, तो शीघ्र ही इसकी निविदा प्रक्रिया पूरी कराकर कार्य शुरू कर दिया जाएगा। पोस्टमार्टम हाउस आधुनिक होने से रिपोर्ट तैयार करने में होने वाली देरी की समस्या दूर हो जाएगी। 2017 में शुरू हुआ चिकित्सालय का संचालन संयुक्त जिला चिकित्सालय का संचालन वर्ष 2017 में शुरू हुआ है। तबसे यहां पर पोस्टमार्टम हाउस का संचालन हो रहा है। इससे पूर्व 1997 में जनपद सृजन होने के बाद 20 वर्षों तक जिले के शवों को देवीपाटन मंडल मुख्यालय गोंडा के चीरघर (पोस्टमार्टम हाउस) में ले जाया जाता था। बीते नौ वर्षों से यह समस्या दूर हो गई है। जिले के 14 थाना क्षेत्रों में सड़क दुर्घटना, हत्या, आत्महत्या व अन्य अप्रिय घटनाओं में किसी की मृत्यु होने पर शवों को संयुक्त जिला चिकित्सालय स्थित पोस्टमार्टम हाउस में ही ले जाया जाता है।

चीरघर का संचालन तो हो रहा है, लेकिन अपेक्षित संसाधन यहां नहीं है। अब 39 लाख से अधिक का बजट मिलने के बाद पोस्टमार्टम हाउस को संसाधनों से लैस किया जाएगा। इन संसाधनों की होगी खरीद

पोस्टमार्टम हाउस में डेढ़ टन एयरकंडिशनर के लिए 70,800 रुपये, मर्चरी के लिए साढ़े चार टन एयरकंडिशनर एक लाख 77 हजार, सीसी कैमरे 199360 रुपये, ट्रे, बाल्टी, उपकरण ट्राली आदि पर 35,400 रुपये खर्च किए जाएंगे। इसी तरह स्टील अलमारी 17,700 रुपये, आफिस मेज, 17,700, प्रिंटर 35,400, आटोमेशन, लैमिनेशन व जीराक्स मशीन 1,77,000, शव रखने के लिए डीप फ्रीजर 1,98,240, पोस्टमार्टम के लिए सीलिंग लाइट 1,94,700, रिवाल्विंग चेयर 14160, स्ट्रेचर 52,911.20 रुपये, विभिन्न प्रकार के निडिल्स, 52911.20 इलेक्ट्रिक हड्डी आरा मशीन 1,99,420 रुपये में खरीदे जाएंगे।

दिल्ली में खुले गड्ढे और नाले बन रहे मौत का सबब सुरक्षा मानकों की हो रही अनदेखी

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

बादल हुसैन

नई दिल्ली में प्रशासनिक लापरवाही के कारण खुले गड्ढों और सीवर में गिरने से मौत का सिलसिला जारी है। हल ही में जनकपुरी में एक बाइक सवार और रोहिणी के बेगमपुर में एक मजदूर की सीवर में गिरने से मौत हुई ये घटनाएं 2026 की शुरुआत में ही सामने आई है, जो सुरक्षा मानकों पर गंभीर सवाल खड़े करतीं हैं। इस के बावजूद भी राजधानी में बिना सुरक्षा के सड़कों पर खुलाई चालु है।आप इस तस्वीर में देख सकते हैं की कीस तरह से बीना कोई बोर्ड के गड्ढे खुला हुआ है।ए नजारा है रानी झांसी रोड के कसरपुरा ईदगाह की जो मैन रोड किनारे ईदगाह की जर्जर दीवार है,वही पर एक बड़ा गड्ढा खोद कर क्षोढ रख है,जो कभी भी बडे हादसे का शिकार हो सकते हैं। वहीं इस ईदगाह की दिवार इतनी जर्जर हो चुका है की रोड के तरफ झुकी हुई है,वे कभी भी गिर सकती है, और कोई घटना में तब्दील हो सकता है।इसी रोड से नई दिल्ली, पुरानी दिल्ली,सदर बाजार, करोलबाग झंडेवालान मंदिर, तथा अन्य स्थानों पर जाने के लिए काफी संख्या में लोग इन्हीं रास्ते से सफर करते हैं। बावजूद भी कोई संबंधित विभाग और नहीं ईदगाह के जिम्मेदार व्यक्ति इस पर ध्यान देने कि जहमत उठाते हैं।आ फिर एक बड़ा हादसा होने का इंतजार कर रहा है। जबकि मौत के मद्देनजर लोक निर्माण विभाग ने दिल्ली में भवन और अन्य निर्माण कार्य करते समय अपने कर्मचारियों के लिए नए निर्देश जारी किए हैं। विभाग ने नींव की खुदाई और निर्माण गतिविधियों के दौरान मजबूत सुरक्षा प्रोटोकॉल का तत्काल पालन करने का निर्देश दिया है। विभाग ने चेतावनी दी है कि निर्धारित सुरक्षा उपायों से किसी भी प्रकार की कमी को गंभीरता से लिया जाएगा और अनुशासनात्मक कार्रवाई की जाएगी। विभाग के निर्देश के बाद भी बिना सुरक्षा घेरे की खुला पड़ा गड्ढा मौत को दावत दे रही है।

'किसान समृद्धि हमारा संकल्प ' भाव के साथ समीक्षा बैठक का किया गया आयोजन

स्वतंत्र प्रभात संवाददाता

ब्यूरो प्रयागराज। देश में वर्तमान कृषि की दशा व दिशा बदलने के लिए मिलकर जिम्मेदारी के साथ कार्य करना है, जिससे सभी की विजय हो। उक्त बातें वरिष्ठ महाप्रबंधक विपणन नई दिल्ली इफको श्री संजय कुलश्रेष्ठ ने बतौर मुख्य अतिथि, इफको पूर्वी उत्तर प्रदेश के क्षेत्र अधिकारियों की समीक्षा बैठक के दौरान कहीं। कार्यक्रम का प्रारंभ 'किसान समृद्धि हमारा संकल्प' के भाव के साथ दीप प्रज्वलित करके किया गया। मुख्य अतिथि ने वर्तमान कृषि में मिट्टी के स्वास्थ्य के प्रति सजग होने की बात कहते हुए कहा की मिट्टी में जीवांश कार्बन की मात्रा को बढ़ाने के लिए कार्य करना होगा। इसके लिए कार्बनिक खादों, हरी खाद एवं जैव उर्वरकों के प्रयोग को जिम्मेदारी पूर्वक बताना होगा। किसान भाइयों को प्रेरित करना होगा कि वह अपनी मिट्टी की जांच कर के मृदा कार्ड के आधार पर उर्वरकों का प्रयोग सुनिश्चित करें जिससे स्वस्थ एवं टिकाऊ उत्पादन मिल सके और भविष्य की कृषि के लिए मिट्टी भी सुरक्षित रहे। कृषि में जैव उर्वरकों के प्रयोग को प्रोत्साहित करने की जरूरत है ताकि मिट्टी में मित्र जीवों की संख्या मे वृद्धि हो और सस्ती एवं टिकाऊ खेती का रास्ता बने। श्री कुलश्रेष्ठ ने बताया की इफको के नैनो उर्वरक पर्यावरण हितैषी हैं एवं कृषि लागत को कम करने में सहायक हैं। इस अवसर पर मुख्य प्रबंधक इफको नई दिल्ली एन.एम. गजेरा , इफको ई बाजार के वरिष्ठ अधिकारी एन.के. भाटिया, राज्य विपणन प्रबंधक इफको उत्तर प्रदेश यतेंद्र तेवतिया, ने अपने विचार व्यक्त किए।

इस अवसर पर इफको फूलपुर इकाई के महाप्रबंधक उत्पादन संजय भंडारी, इफको के संयुक्त उद्यम नैनो विजन, ई बाजार, इफको एमसी के अधिकारीगण उपस्थित रहे। कार्यक्रम में पूर्वी उत्तर प्रदेश के 40 क्षेत्राधिकारियों ने प्रतिभाग किया। कार्यक्रम के दौरान प्रधानाचार्य कोरडेट डॉ.डी.के.सिंह ने सभी प्रतिभागियों को कोरडेट की गतिविधियों से परिचित कराया एवं विभिन्न इकाइयों का भ्रमण भी कराया तथा नैनो उर्वरकों, जैव उर्वरकों के विभिन्न रवि फसलों पर लगे ट्रायल्स एवं प्रदर्शनों का भी अवलोकन कराया। संयुक्त महाप्रबंधक इफको नैनो संयंत्र, फूलपुर, अरुण कुमार ने सभी प्रतिभागियों को नैनो यूरिया संयंत्र का भ्रमण कराया।